नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 126
दि. 08.02.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

मुंबई की सत्ता में नया अध्याय, तावड़े की ताजपोशी तय

(जीएनएस)। मुंबई महानगरपालिका की राजनीति में शनिवार को तस्वीर पूरी तरह साफ हो गई, जब भारतीय जनता पार्टी ने मेयर पद के लिए अपने पत्ते खोलते हुए वरिष्ठ नगरसेवक रितु तावड़े को उम्मीदवार घोषित कर दिया। लंबे समय से चल रही अटकलों, बैठकों और गठबंधन के भीतर समीकरण साधने के बाद आखिरकार यह तय हो गया कि मुंबई का अगला प्रथम नागरिक पद भाजपा के खाते में जाएगा, जबकि उप महापौर का पद शिवसेना शिंदे गुट को मिलेगा। उप महापौर पद के लिए शिंदे गुट ने संजय घाटी को मैदान में उतारा है। दोनों प्रत्याशियों ने नामांकन के आखिरी दिन अपने-अपने पर्चे दाखिल कर दिए, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि 11 फरवरी को होने वाला चुनाव अब महज औपचारिकता भर रह गया है।

बीएमसी मेयर चुनाव को लेकर बीते कुछ दिनों से राजनीतिक हलचल तेज थी। भाजपा और शिवसेना शिंदे गुट के बीच सीटों के बंटवारे और पदों को लेकर लगातार मंथन चल रहा था। अंततः भाजपा ने यह स्पष्ट कर दिया कि सबसे बड़े दल के रूप में मेयर पद पर उसका ही उम्मीदवार बैठेगा। इसके जवाब में शिंदे गुट ने उप महापौर पद की मांग रखी, जिसे भाजपा ने स्वीकार कर लिया। इस सहमति के साथ ही गठबंधन में किसी तरह की खींचतान पर विराम लग गया और सत्ता समीकरण पूरी तरह स्पष्ट हो गया। सीटों के गणित की बात करें तो बीएमसी में बहुमत के लिए जरूरी 114 सीटों के आंकड़े को भाजपा और शिंदे गुट पहले ही पार कर चुके हैं, जिससे उनका दावा मजबूत हो गया था।

इस पूरे घटनाक्रम में सबसे अहम भूमिका शिवसेना उद्धव ठाकरे गुट के फैसले ने निभाई। उद्धव गुट ने इस बार मेयर चुनाव में अपना उम्मीदवार न उतारने का ऐलान कर दिया है। पार्टी ने साफ कहा कि वह सत्ता की दौड़ में शामिल होने के बजाय बीएमसी में एक सशक्त विपक्ष की भूमिका निभाएगी। इस फैसले के बाद भाजपा उम्मीदवार रितु तावड़े का निर्विरोध मेयर चुना जाना लगभग तय माना जा रहा है। उद्धव गुट की ओर से चुनौती न

दिए जाने के कारण 11 फरवरी को होने वाला चुनाव केवल संवैधानिक प्रक्रिया भर रह जाएगा। इस निर्णय ने यह भी संकेत दे दिया है कि आने वाले समय में बीएमसी में सत्ता पक्ष और विपक्ष की भूमिका किस तरह बंटी हुई नजर आएगी।

रितु तावड़े का नाम सामने आते ही भाजपा खेमे में उत्साह का माहौल देखा गया। पार्टी उन्हें एक अनुभवी, जमीनी और आक्रामक नेता के रूप में पेश कर रही है, जिनकी पकड़ शहरी मुद्दों पर मजबूत मानी जाती है। तावड़े का राजनीतिक सफर उतार-चढ़ाव से भरा रहा है। उन्होंने अलग-अलग वार्डों से चुनाव लड़ा, जीत भी हासिल की और हार का सामना भी किया, लेकिन हर बार राजनीति में उनकी मौजूदगी बनी रही। 2012 में उन्होंने जीत दर्ज कर निगम में कदम रखा, 2017 में चुनाव हारने के बावजूद संगठन में सक्रिय रहीं और 2025–26 के चुनाव में वार्ड 132 से बड़ी जीत के साथ जोरदार वापसी की। इसी निरंतरता और संगठनात्मक अनुभव के आधार पर पार्टी ने उन्हें मेयर पद के लिए चुना है।

महापौर पद के लिए रितु तावड़े के नाम पर मुहर लगना भाजपा की उस रणनीति का भी हिस्सा माना जा रहा है, जिसमें महिला नेतृत्व को आगे बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है। मुंबई जैसी महानगरपालिका में महिला मेयर का चेहरा पार्टी के लिए राजनीतिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर अहम संदेश देता है। तावड़े को एक ऐसे नेता के रूप में देखा जा रहा है, जो मराठी और गुजराती दोनों समुदायों के बीच संतुलन बना सकती हैं। मराठा समुदाय से आने के बावजूद उन्होंने गुजराती बहुल क्षेत्रों से चुनाव जीतकर यह साबित किया है कि उनका जनाधार सीमित दायरे तक नहीं है।

उप महापौर पद के लिए संजय घाटी के नाम की घोषणा के साथ ही शिंदे गुट ने भी यह साफ कर दिया है कि गठबंधन में उसकी भूमिका केवल सहयोगी की नहीं, बल्कि सत्ता में हिस्सेदारी वाली है। संजय घाटी को संगठनात्मक तौर पर सक्रिय और भरोसेमंद चेहरा माना जाता है। उप महापौर पद मिलने से शिंदे गुट को बीएमसी के प्रशासनिक फैसलों में सीधी भागीदारी का मौका मिलेगा, जो आगामी स्थानीय राजनीति के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

बीएमसी चुनाव के बाद से ही यह लगभग तय था कि मेयर पद भाजपा के पास जाएगा, लेकिन उद्धव गुट की संभावित चुनौती को लेकर संशय बना हुआ था। कुछ दिन पहले उद्धव ठाकरे गुट की ओर से संकेत दिए गए थे कि वह भी उम्मीदवार उतार सकता है, लेकिन अंततः पार्टी ने रणनीतिक रूप से पीछे हटने का फैसला किया। राजनीतिक जानकारों के मुताबिक, यह फैसला भविष्य की राजनीति को ध्यान में रखकर लिया गया है, ताकि बीएमसी में सत्ता पक्ष की नीतियों और फैसलों पर सीधा और मुखर विपक्ष तैयार किया जा सके।

इस बीच, भाजपा नेतृत्व रितु तावड़े को मुंबई के विकास, बुनियादी सुविधाओं और नागरिक समस्याओं के समाधान का चेहरा बनाकर पेश करने की तैयारी में जुट गया है। पार्टी का दावा है कि उनके नेतृत्व में बीएमसी में 'शासन आपल्या दारी' और 'लाडकी बहीण' जैसी योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू किया जाएगा और आम मुंबईकर को उनका सीधा लाभ मिलेगा। पानी, सड़क, सफाई और महिला सुरक्षा जैसे मुद्दों पर तावड़े की आक्रामक शैली को भाजपा अपनी बड़ी ताकत मान रही है।

नामांकन के बाद राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा भी तेज हो गई है कि आने वाले महीनों में बीएमसी की कार्यशैली किस दिशा में जाएगी। गठबंधन के भीतर तालमेल, विपक्ष की भूमिका और मुंबई जैसे महानगर की जटिल समस्याओं से निपटना नई महापौर के सामने बड़ी चुनौती होगी। हालांकि भाजपा और शिंदे गुट दोनों का दावा है कि उनके पास स्पष्ट बहुमत और मजबूत नेतृत्व है, जिससे फैसले लेने में किसी तरह की अड़चन नहीं आएगी।

रितु तावड़े का जन्म 18 अप्रैल 1973 को हुआ। उन्होंने एस.वाई.बी.कॉम तक शिक्षा प्राप्त की है। उनके परिवार में पति राजेश तावड़े, जो पेशे से उद्यमी हैं, एक बेटा यश, जो कंप्यूटर इंजीनियर है, और एक बेटी मधुरा, जो अधिवक्ता हैं, शामिल हैं। रितु तावड़े शिक्षा समिति की पूर्व अध्यक्षा रह चुकी हैं और महिला मोर्चा में भी सक्रिय भूमिका निभा चुकी हैं। वे महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा महिला मोर्चा की उपाध्यक्ष भी रह चुकी हैं। घाटकोपर जैसे गुजराती बहुल क्षेत्र से जीत दर्ज कर उन्होंने खुद को एक ऐसे मराठी चेहरे के रूप में स्थापित किया है, जो अलग-अलग समुदायों को जोड़ने की क्षमता रखता है। महिलाओं के सम्मान और अश्लील विज्ञापनों के खिलाफ उनके आंदोलन, पानी माफियाओं के खिलाफ 'हंडा मोर्चा' और महिला आर्थिक विकास महामंडल में उनके कार्यों को उनके राजनीतिक सफर की प्रमुख उपलब्धियों के तौर पर देखा जाता है।

न्याय मिला, मगर सांसें थम गईं: बीस रुपये के आरोप ने छीन ली पूरी जिंदगी

(जीएनएस)। यह खबर किसी अख़बार के पन्ने पर छपी एक सामान्य अदालत की रिपोर्ट भर नहीं है, बल्कि भारतीय न्याय व्यवस्था की उस स्याह सच्चाई का आईना है, जहां इंसाफ तो मिलता है, लेकिन इतनी देर से कि उसे पाने वाला इंसान खुद समय से हार जाता है। गुजरात में एक साधारण पुलिस कांस्टेबल की जिंदगी केवल 20 रुपये की कथित रिश्वत के आरोप में ऐसे उलझी कि पूरे तीस साल अदालतों की तारीखों, फाइलों और फैसलों के बीच गुजर गए। जब आखिरकार अदालत ने कहा कि वह बेगुनाह है, तो उसके अगले ही दिन उसकी मौत हो गई। सवाल यही है कि क्या ऐसे इंसाफ को जीत कहा जा सकता है।

यह कहानी बाबूभाई प्रजापति की है, जो वर्ष 1996 में अहमदाबाद में पुलिस कांस्टेबल के रूप में तैनात थे। एक दिन उन पर आरोप लगा कि उन्होंने 20 रुपये की रिश्वत ली है। यह राशि इतनी छोटी थी कि आज के समय में शायद चाय-पानी के खर्च में भी गिनी न जाए, लेकिन इसी आरोप ने उनके पूरे जीवन की दिशा बदल दी। भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत उनके खिलाफ मामला दर्ज हुआ। उस वक्त किसी ने नहीं सोचा था कि यह केस तीन दशक लंबा सफर तय करेगा और एक इंसान की पूरी उम्र निगल जाएगा।

1997 में सत्र न्यायालय में उनके खिलाफ आरोपपत्र दाखिल हुआ। इसके बाद वर्षों तक मामला अदालत में चलता रहा। तारीख पर तारीख पड़ती रही। 2002 में जाकर उनके खिलाफ आरोप तय किए गए और 2003 में गवाहों की सुनवाई शुरू हुई। इस दौरान बाबूभाई प्रजापति न केवल एक आरोपी के रूप में अदालत में खड़े रहे, बल्कि समाज में भी उन्हें संदेह की नजरों से देखा जाने लगा। एक पुलिसकर्मी, जिसकी पहचान कानून के रक्षक के रूप में होती है, वही व्यक्ति कानून के कठघरे में खड़ा था। 2004 में सत्र न्यायालय ने उन्हें दोषी ठहराया और चार साल की जेल तथा तीन हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई। यह फैसला उनके लिए किसी वज्रपात से कम नहीं था। उनके करियर पर विराम लग गया, परिवार की आर्थिक हालत बिगड़ती चली गई और सामाजिक प्रतिष्ठा लगभग खत्म हो गई। इसके बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी और गुजरात हाईकोर्ट में इस फैसले को चुनौती दी। उन्हें उम्मीद थी कि ऊपरी अदालत में उन्हें न्याय मिलेगा और सच्चाई सामने आएगी।

लेकिन यहीं से शुरू हुआ न्याय का सबसे लंबा इंतजार। उनकी अपील पूरे 22 साल तक गुजरात हाईकोर्ट में लंबित रही। इन 22 वर्षों में उनका जीवन धीरे-धीरे ढलता चला गया। उम्र बढ़ती गई, शरीर कमजोर होता गया और हर गुजरते साल के साथ यह सवाल और गहराता गया कि आखिर इंसाफ कब मिलेगा। अदालतों की धीमी प्रक्रिया ने उनके जीवन के सबसे कीमती साल छीन लिए। जिस दौरान कोई व्यक्ति अपने बच्चों का भविष्य संवारता है या शांत जीवन की तैयारी करता है, उस दौरान बाबूभाई प्रजापति अदालतों के चक्कर लगाते रहे।

चार फरवरी को आखिरकार गुजरात हाईकोर्ट ने फैसला सुनाया। अदालत ने साफ कहा कि अभियोजन पक्ष आरोपों को साबित करने में असफल रहा है। गवाहों के बयानों में गंभीर विरोधाभास हैं और केवल संदेह के आधार पर किसी को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। इस फैसले के साथ बाबूभाई प्रजापति को पूरी तरह बरी कर दिया गया। तीस साल बाद अदालत ने माना कि वह निर्दोष हैं।

फैसले के बाद बाबूभाई प्रजापति ने राहत की सांस ली। उन्होंने कहा कि अब उनके जीवन से कलंक हट गया है और अगर ईश्वर अब उन्हें अपने पास भी बुला लें, तो उन्हें कोई दुख नहीं होगा। यह शब्द उस व्यक्ति के थे, जिसने तीन दशक तक न्याय की प्रतीक्षा की थी। उनके चेहरे पर संतोष था, आंखों में भावुकता और मन में यह तसल्ली कि आखिरकार सच की जीत हुई।

बंदर बुखार से जंग की नई शुरुआत: आईसीएमआर ने क्यासानूर वन रोग की देसी वैक्सीन का मानव परीक्षण शुरू किया

(जीएनएस)। क्यासानूर वन रोग, जिसे आम बोलचाल में 'बंदर बुखार' कहा जाता है, वर्षों से देश के पश्चिमी घाट क्षेत्र के लिए एक गंभीर स्वास्थ्य चुनौती बना हुआ है। जंगलों और पहाड़ी इलाकों में फैलने वाला यह संक्रामक रोग हर साल कई जिंदगियों को प्रभावित करता है और स्थानीय आबादी के साथ-साथ स्वास्थ्य व्यवस्था पर भी भारी दबाव डालता है। अब इस बीमारी के खिलाफ एक बड़ी और उम्मीद जगाने वाली पहल सामने आई है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने इस रोग के लिए एक सुधारित, सुरक्षित और पूरी तरह देश में विकसित वैक्सीन के मानव क्लिनिकल ट्रायल की शुरुआत कर दी है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने शनिवार को इसकी जानकारी देते हुए बताया कि यह कदम क्यासानूर वन रोग से प्रभावी ढंग से निपटने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह वैक्सीन विशेष रूप से उन राज्यों को ध्यान में रखकर विकसित की जा रही है, जहां यह बीमारी सबसे अधिक पाई जाती है। कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, गोवा और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में हर साल इसके मामले सामने आते हैं और खासकर जंगलों के आसपास रहने वाले लोग इसकी चपेट में आते हैं।

क्यासानूर वन रोग एक वायरल संक्रमण है,

जो मुख्य रूप से टिक यानी किलनी के काटने से फैलता है। यह बीमारी तेज बुखार, सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द, कमजोरी और कई मामलों में गंभीर जटिलताओं का कारण बनती है। पहले भी इसके लिए वैक्सीन उपलब्ध थी, लेकिन उसकी प्रभावशीलता और सुरक्षा को लेकर समय-समय पर सवाल उठते रहे हैं। इन्हीं चुनौतियों को देखते हुए कर्नाटक सरकार के अनुरोध पर आईसीएमआर ने एक नई और बेहतर वैक्सीन विकसित करने का निर्णय लिया।

इस परियोजना के तहत आईसीएमआर ने इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड और आईसीएमआर के राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान के साथ मिलकर काम किया है। मिलकर एक दो खुराक वाली एडजुवेंटेड इनएक्टिवेटेड वैक्सीन तैयार की गई है, जिसे 28 दिन के अंतराल पर दिया जाएगा। यह वैक्सीन पूरी तरह से देश में विकसित की गई है, जिससे न केवल इसकी उपलब्धता आसान होगी, बल्कि लागत भी अपेक्षाकृत कम रहने की उम्मीद है।

स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, इस वैक्सीन पर अब तक का सफर उत्साहजनक रहा है। पशुओं पर किए गए परीक्षण और विषाक्तता से जुड़े अध्ययन सफलतापूर्वक पूरे कर लिए गए हैं। इसके साथ ही जीएलपी ग्रेड वैक्सीन का निर्माण भी किया जा चुका है। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन से आवश्यक मंजूरी मिलने के बाद अब इसका फेज-I मानव ट्रायल शुरू कर दिया गया है। इस चरण में वैक्सीन की सुरक्षा और शुरुआती प्रभावशीलता का आकलन किया जाएगा।

यदि फेज-I के नतीजे सकारात्मक रहते हैं, तो इसके बाद अगले चरणों के क्लिनिकल ट्रायल शुरू किए जाएंगे। सभी चरणों में वैक्सीन के सुरक्षित और प्रभावी पाए जाने पर इसे औपचारिक मंजूरी के लिए ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया के पास भेजा जाएगा। मंजूरी मिलने के बाद इसे व्यापक स्तर पर इस्तेमाल के लिए उपलब्ध कराया जा सकेगा। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने यह भी स्पष्ट किया है कि केंद्र सरकार राज्यों के साथ मिलकर इस तरह की स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने के लिए लगातार सहयोग करती रहेगी। क्यासानूर वन रोग जैसी क्षेत्रीय लेकिन गंभीर बीमारियों के लिए देसी समाधान विकसित करना न केवल वैज्ञानिक आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम है, बल्कि लाखों लोगों के लिए सुरक्षा की मजबूत ढाल भी साबित हो सकता है। इस वैक्सीन के सफल होने पर पश्चिमी घाट क्षेत्र में रहने वाले लोगों के लिए यह एक नई उम्मीद लेकर आएगी और 'बंदर बुखार' के डर को काफी हद तक कम कर सकेगी।

यमुना एक्सप्रेसवे पर दर्दनाक हादसा, लापरवाही ने ली छह जानें

(जीएनएस)। मथुरा। यमुना एक्सप्रेसवे एक बार फिर तेज रफ्तार और लापरवाही का गवाह बना, जहां शनिवार तड़के हुए भीषण सड़क हादसे में छह निर्दोष लोगों की जान चली गई और एक अन्य व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। यह दर्दनाक घटना सुरीर थाना क्षेत्र में रात करीब 2:45 बजे हुई, जब नोएडा से कानपुर के रसूलाबाद जा रही एक यात्री बस थोड़ी देर के लिए सड़क किनारे रुकी थी। बस के रुकते ही यात्रियों को अंदाजा भी नहीं था कि कुछ ही पलों में यह ठहराव उनके जीवन का आखिरी पड़ाव बन जाएगा।

पुलिस के अनुसार बस एक यात्री के वॉशरूम जाने के लिए यमुना एक्सप्रेसवे के किनारे रुकी थी। बस से कुछ यात्री नीचे उतरे ही थे कि उसी दौरान पीछे से तेज रफ्तार में आ रहे एक कंटेनर ट्रक ने नियंत्रण खोते हुए बस को साइड से जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि बस के पास खड़े यात्रियों को संभलने का मौका तक नहीं मिला और वे कंटेनर की चपेट में आ गए। हादसे में छह यात्रियों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक अन्य गंभीर रूप से घायल हो गया।

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि टक्कर की आवाज सुनते ही एक्सप्रेसवे पर अफरा-तफरी मच गई। कुछ लोग इधर-उधर भागने लगे, तो कुछ ने घायलों को बचाने की कोशिश की। हादसे के बाद एक्सप्रेसवे पर कुछ देर के लिए यातायात भी प्रभावित हुआ। सूचना मिलते ही पुलिस और एंबुलेंस मौके पर पहुंची और घायलों को तत्काल जिला अस्पताल भेजा गया। गंभीर रूप से घायल व्यक्ति का इलाज जारी है और डॉक्टरों के अनुसार उसकी हालत फिलहाल स्थिर बनी हुई है।

इस हादसे के बाद बस और कंटेनर ट्रक के चालक मौके से फरार हो गए। पुलिस ने बताया कि दोनों वाहनों की पहचान के प्रयास किए जा रहे हैं और सीसीटीवी फुटेज व अन्य तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर आरोपियों की तलाश तेज कर दी गई है। पुलिस का कहना है कि प्रथम दृष्टया हादसे की वजह तेज रफ्तार और लापरवाही प्रतीत होती है।

स्थानीय लोगों और सामाजिक संगठनों ने इस हादसे को लेकर एक्सप्रेसवे की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। उनका कहना है कि यमुना एक्सप्रेसवे पर आए दिन होने वाले हादसे यह साबित करते हैं कि यहां तेज गति से दौड़ने वाले भारी वाहनों पर प्रभावी नियंत्रण नहीं है। रात के समय बसों और अन्य यात्री वाहनों का सड़क किनारे रुकना भी बेहद खतरनाक साबित हो रहा है।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मामले की विस्तृत जांच की जा रही है और मृतकों की पहचान कर उनके परिजनों को सूचना दी जा रही है। पोस्टमार्टम की प्रक्रिया पूरी होने के बाद शवों को परिजनों को सौंपा जाएगा। प्रशासन ने मृतकों के परिवारों को हर संभव सहायता का आश्वासन दिया है। यह हादसा एक बार फिर यह सवाल खड़ा करता है कि आखिर कब तक एक्सप्रेसवे पर तेज रफ्तार और लापरवाही लोगों की जान लेती रहेगी। सड़क सुरक्षा नियमों का कड़ाई से पालन, भारी वाहनों की गति पर नियंत्रण और यात्रियों की सुरक्षा को लेकर ठोस कदम उठाए बिना ऐसे हादसों पर रोक लगाना मुश्किल नजर आता है।

सूरजकुंड मेले में झूला हादसा मातम पसरा चारोंओर

(जीएनएस)। फरीदाबाद में आयोजित विश्वप्रसिद्ध सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेले में शनिवार की शाम उस वक्त खुशियों का माहौल चीख-पुकार और अफरातफरी में बदल गया, जब मेले में लगा 'सुनामी' नामक झूला अचानक टूटकर नीचे आ गिरा। रंग-बिरंगी रोशनी, संगीत और बच्चों की हंसी से भरे मेले में कुछ ही पलों में मातम छा गया। झूले पर सवार लोग और आसपास खड़े दर्शक संभल भी नहीं पाए थे कि तेज आवाज के साथ झूला नीचे गिर पड़ा और कई लोग इसकी चपेट में आ गए। हादसे के बाद पूरे मेले में दहशत फैल गई और लोग जान बचाने के लिए इधर-उधर भागते नजर आए। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक झूला पूरी रफ्तार से ऊपर-नीचे घूम रहा था, तभी अचानक उसका एक हिस्सा टूट गया। संतुलन बिगड़ते ही झूला सीधे जमीन से टकराया और उस पर बैठे लोग उछलकर नीचे गिर पड़े। कुछ लोग झूले के नीचे दब गए, जबकि कई दर्शक भी इसकी जद में आकर घायल हो गए। हादसे के तुरंत बाद वहां मौजूद पुलिस और प्रशासनिक अमले ने बचाव कार्य शुरू किया, लेकिन शुरुआती कुछ मिनट बेहद डरावने रहे, क्योंकि लोग अपनों को ढूंढते हुए चिल्ला रहे थे। इस हादसे में कुल 13 लोगों के घायल होने की पुष्टि हुई है। घायलों को तुरंत नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया गया, जहां कुछ की हालत गंभीर बताई जा रही है। इस दर्दनाक घटना में ड्यूटी पर तैनात पुलिस इंस्पेक्टर जगदीश प्रसाद को भी गंभीर चोटें आईं। वे हादसे के बाद बचाव कार्य में जुटे थे और घायलों को बाहर निकालने में मदद कर रहे थे, तभी उन्हें भी चोट लग गई। उन्हें आनन-फानन में अस्पताल ले जाया गया, लेकिन इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। उनकी मौत की खबर मिलते ही पुलिस महकमे और प्रशासन में शोक की लहर दौड़ गई।

हादसे की सूचना मिलते ही वरिष्ठ पुलिस अधिकारी और जिला प्रशासन के आला अधिकारी मौके पर पहुंचे। पूरे इलाके को घेर लिया गया और मेले के उस हिस्से को तुरंत खाली करा लिया गया। एंबुलेंसों की आवाज और पुलिस सायरन से पूरा इलाका गूंज उठा। घायलों को प्राथमिक उपचार देने के लिए अस्थायी मेडिकल सहायता भी उपलब्ध कराई गई। कई लोगों को सिर, हाथ-पैर और रीढ़ में गंभीर चोटें आई हैं, जिनका इलाज जारी है। इस घटना ने मेले की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। सूरजकुंड मेला देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों के लिए जाना जाता है और हर साल यहां लाखों लोग पहुंचते हैं। प्रशासन की ओर से सुरक्षा के पुख्ता इंतजामों के दावे किए जाते रहे हैं, इसके बावजूद झूले जैसे मनोरंजन साधनों की तकनीकी जांच और रखरखाव में चूक सामने आई है। स्थानीय लोगों और प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि झूले की हालत पहले से ही ठीक नहीं लग रही थी, लेकिन इसके बावजूद उसे चालू रखा गया। हादसे के कुछ समय बाद मेले के गेट नंबर-2 के पास एक और घटना सामने आई, जब वहां लगा एक द्वार अचानक गिर गया और एक व्यक्ति घायल हो गया। इस दूसरी घटना ने प्रशासन की तैयारियों पर और भी सवाल खड़े कर दिए। हालांकि इस हादसे में जान का नुकसान नहीं हुआ, लेकिन इससे यह साफ हो गया कि मेले में संरचनात्मक सुरक्षा को लेकर गंभीर लापरवाही बरती गई है। प्रशासन की ओर से मामले की जांच के आदेश दे दिए गए हैं। झूला संचालक से पूछताछ की जा रही है और यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि तकनीकी खराबी किस वजह से हुई। साथ ही यह भी जांच की जा रही है कि क्या झूले की नियमित फिटनेस और सुरक्षा जांच की गई थी या नहीं। शुरुआती जांच में लापरवाही की आशंका जताई जा रही है।

नवसर्जन संस्कृति
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2063

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
नवसर्जन संस्कृति हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

बजट आया और गया

लो जी, बजट का जादू खत्म हुआ। जिनको बजट में लड्डू मिल गए, वे खुशियां मनाएं, भांगड़े डालें, सीटियां बजाएं और सोशल मीडिया पर पोस्ट डालें—थैंक यू सरकार जी। जिन्हें कुछ नहीं मिला, वे भाड़ में जाएंनारे लगाएं, धरने दें, बयानबाजी करें और रात को घर जाकर पत्नी से बहस करके चुपचाप करवट बदलकर सो जाएं। और जिन्हें बजट समझ ही नहीं आया, वे अपने सिर की मालिश करवाएं, कान खुजाएं या माथे पर हाथ मारकर कहें—ये अर्थव्यवस्था हमारे बस की नहीं। बजट आया, बजट गया, और हम वहीं खड़े रहे—हाथ में रसीदें, दिमाग में सवाल और जेब में वही पुरानी हवा।

विपक्ष वाले प्रेस कॉन्फ्रेंस में बोले—देश बर्बाद हो गया। सत्ता पक्ष वाले बोले—देश तरक्की कर गया। जनता बोली—भाई, सिलेंडर सस्ता हुआ या नहीं? पेट्रोल कम हुआ या नहीं? फीस, किराया, दवा—इनका क्या हुआ? मगर इन सवालों के जवाब बजट भाषण में नहीं, विज्ञापनों में मिलते हैं। वित्त मंत्री जी आईं, भाषण पढ़ा, बीच-बीच में पानी पिया, कभी मुस्कुराईं, कभी गंभीर हुईं, और अंत में फाइल बंद करके ऐसे निकल गईं जैसे स्कूल की प्रिंसिपल वार्षिक समारोह खत्म करके घर चली जाती है। तालियां बजीं, कैमरे चमके, और देश ने राहत की सांस ली—चलो, एक और बजट निपट गया।

अगले दिन अखबारों ने ऐसा माहौल बनाया जैसे चांद पर प्लॉट बंट रहे हों। ऐतिहासिक बजट, गरीबों का बजट, मिडिल क्लास को राहत, युवाओं के लिए वरदान—हर हेडिंग पढ़कर लगा अब तो जिंदगी सेट है। बस थोड़ा धैर्य रखो, लॉन्ग टर्म में सब ठीक हो जाएगा। फिर जब जेब टटोली, तो वही पुरानी खालीपन की हवा चली। लॉन्ग टर्म में शायद सब ठीक हो, पर शॉर्ट टर्म में किराना वाला उधार लिख रहा था और मोबाइल में बैंक का मैसेज आ रहा था—ईएमआई कट गई है।

टीवी चैनलों पर एक्सपर्ट ऐसे टूट पड़े जैसे बारात में जलेबी मुफ्त बंट रही हो। कोई ग्राफ दिखा रहा है, कोई चार्ट बना रहा है, कोई कह रहा है—डिमांड साइड स्टिमुलस, सप्लाई साइड रिफॉर्म, फिस्कल डेफिसिट कंट्रोल। अरे भैया, हमें अंग्रेजी नहीं आती तो क्या हुआ, गणित तो आता है। महीने की 30 तारीख तक कैसे पहुंचें, वो बता दो। एक्सपर्ट बोले—लॉन्ग टर्म बेनिफिट्स होंगे। हमने रिमोट घुमाया और सोचा—लॉन्ग टर्म तक जिंदा भी रहे या नहीं, ये भी एक रिस्क है। मोहल्ले के शर्मा जी कैलकुलेटर लेकर बैठ गए। बोले—इस बार टैक्स बचेगा। तीन घंटे तक जोड़-घटाव चला। पत्नी ने चाय दी, बच्चों ने शोर मचाया, और अंत में शर्मा जी बोले—अरे यार, सौ रुपए और कटेंगे। वर्मा जी बोले—सरकार बहुत बढ़िया काम कर रही है। पूछो—क्या मिला? बोले—अभी व्हाट्सएप यूनिवर्सिटी से पता चलेगा। वहां से आया—देश उड़ान भर रहा है। वर्मा जी खुश। पूछो—तुम? बोले—मैं तो अभी रनवे पर ही हूं। सब्जी वाला बोला—टमाटर महंगे हैं, बजट आया है ना। चाय वाला बोला—चीनी बढ़ गई, बजट का असर है। पेट्रोल पंप वाला बोला—सरकार ने नहीं बढ़ाया, हमने बढ़ा दिया। स्कूल वाला बोला—नई सुविधाएं हैं, इसलिए फीस बढ़ी। अस्पताल वाला बोला—मशीनें महंगी हैं, इसलिए बिल बढ़ा। मतलब बजट से ज्यादा फायदा बहानों को हुआ। हर बढ़ोतरी का एक ही जवाब—बजट का असर है। असर ऐसा कि हमेशा ऊपर से नीचे गिरता है, नीचे से ऊपर कभी नहीं जाता। हम आम लोग टीवी के सामने बैठे ऐसे सिर हिलाते रहे जैसे सब समझ आ गया हो। अंदर से आत्मा कह रही थी—बेटा, ये सब तेरे लेवल की चीज नहीं है। तू बस बिल भर, टैक्स दे, लाइन में लग और खुश रहने की कोशिश कर। शाम होते-होते बजट पुराना हो गया। अगले दिन नई खबर—किसी नेता की रैली, किसी फिल्म का ट्रेलर, किसी क्रिकेटर का शतक। बजट बेचारा अखबार लपेटने के काम आ गया। जिस कागज पर सपने छपे थे, उसी से अब मूंगफली बंध रही थी। सरकार बोली—राहत दी। दुकानदार बोला—बढ़ोतरी की। ग्राहक बोला—उधार लिख लो। बजट के दिन देशभक्ति बढ़ जाती है। अगले दिन किस्तें याद आ जाती हैं। किसान सोचता रहा—मेरी फसल का क्या? न्यूनतम समर्थन मूल्य की लाइनें पढ़ीं, पर खेत में खड़ा रहकर जो दाम मिलता है, वो लाइन से बाहर होता है। नौजवान सोचता रहा—नौकरी का क्या? स्किल, स्टार्टअप, इनोवेशन सब सुना, पर इंटरव्यू में पूछा गया—अनुभव है? अनुभव कहां से लाऊं, अगर नौकरी ही नहीं है? मिडिल क्लास सोचता रहा—बचत का क्या? बचत वही जो बच जाए। टैक्स के बाद, बिल के बाद, फीस के बाद, दवा के बाद अगर कुछ बचा तो वही बचत। नेता सोचता रहा—वोट का क्या? बजट में योजनाएं थीं।

समस्या निराकरण नहीं, अखाड़ा बनी संसद

> देश के बजाय निहित राजनीतिक हितों को प्राथमिकता देने से समस्याओं का अंबार कम होने का नाम नहीं ले रहा है। इससे पहले कि हालात बेकाबू हों, देश के कर्णधार जिम्मेदारी का एहसास करें और देश की समस्याओं के निदान में गंभीरता दिखाएं

देश में मौजूद गंभीर मुद्दों पर चर्चा और उनके समाधान के प्रयासों के बजाय निहित राजनीतिक स्वार्थों के लिए संसद में दलगत राजनीति भारी पड़ रही है। संसद सत्तारूढ़ दल और विपक्ष के लिए अखाड़ा बनी हुई है। देश के कर्णधारों को देश की बिगड़ती दिशा-दशा की कोई परवाह नहीं है। दिल्ली अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) और अन्य शोधों के अनुसार, वायु प्रदूषण न केवल श्वसन प्रणाली, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य को भी गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है। जहरीली हवा के लंबे समय तक संपर्क में रहने से तनाव, चिंता, अवसाद (डिप्रेशन), संज्ञानात्मक हानि और बच्चों में एडीएचडी जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं, जिसे विशेषज्ञ एक 'मानसिक स्वास्थ्य आपातकाल' मान रहे हैं। एरोसोल सूक्ष्म कणों पीएम 2.5 और जहरीली गैसों से दिमागी सूजन और ऑक्सीडेटिव तनाव होता है, जो अवसाद और चिड़चिड़ापन पैदा करता है। प्रदूषण के कारण वयस्कों में भावनात्मक थकान, निर्णय लेने की क्षमता में कमी और बच्चों में सीखने में कठिनाई देखी जा रही है। लंबे समय तक प्रदूषित हवा में रहने से अल्जाइमर और पार्किंसंस जैसे तंत्रिका अपक्षयी विकारों का खतरा बढ़ जाता है। अध्ययन बताते हैं कि पीएम 2.5 के एरोसोल घटक, डिप्रेशन और चिंता से सीधे जुड़े हैं। एम्स की एक अन्य रिसर्च में स्पीच एनालिसिस तकनीक के जरिए डिप्रेशन की पहचान की जा रही है, जो बताता है कि मानसिक स्वास्थ्य पर प्रदूषण का असर कितना गहरा है। विशेषज्ञों के अनुसार, स्मॉग के दौरान बाहर निकलने से बचें, मास्क का उपयोग करें, घर में एयर प्यूरीफायर लगाएं और तनाव कम करने के लिए योग व स्वस्थ जीवनशैली अपनाएं। इसी तरह इंडियन साइकियाट्रिक सोसायटी की 77वीं वार्षिक राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में विशेषज्ञों ने बताया कि आज भारत में करीब 60 प्रतिशत मानसिक रोग 35 साल से कम उम्र के लोगों में पाए जा रहे हैं। यह आंकड़ा इसलिए चिंताजनक है क्योंकि यही उम्र पढ़ाई पूरी करने, करियर बनाने और समाज में सक्रिय भूमिका निभाने की होती है। अगर इसी समय मानसिक समस्याएं शुरू हो जाएं और उनका इलाज न हो, तो इसका असर पूरी जिंदगी पर पड़ सकता है।

कान्फ्रेंस में यह भी बताया गया कि कोविड-19 महामारी, आर्थिक अस्थिरता और बदलती सामाजिक संरचना ने युवाओं के तनाव को और बढ़ा दिया है। महामारी के बाद पढ़ाई, नौकरी और भविष्य को लेकर अनिश्चितता ने चिंता और डिप्रेशन के मामलों में इजाफा किया है। जिम्मेदार राष्ट्र सूचकांक-2026 में सिंगापुर पहले स्थान पर काबिज है, वहीं भारत 16वें नंबर पर है। रिपोर्ट में यह आंका गया है कि कोई देश अपने लोगों और पूरी दुनिया के लिए कितना जिम्मेदार है। इस सूची में सिंगापुर को दुनिया का सबसे जिम्मेदार देश घोषित किया गया है। सिंगापुर ने शासन, समाज और पर्यावरण के क्षेत्र में बेहतर काम करके पहला स्थान हासिल किया है। इसी तरह साल 2026 के ग्लोबल सॉफ्ट पावर इंडेक्स में भारत 48.0 के स्कोर के साथ इस फेहरिस्त में 32वें स्थान पर है। यह पिछले साल के मुकाबले दो स्थान नीचे और 1.8 अंक कम है। सॉफ्ट पावर किसी देश की उस क्षमता को कहते हैं, जिसमें वह सैन्य बल के बजाय अपनी संस्कृति और मूल्यों से दूसरे देशों को प्रभावित करता है। विश्व रैंकिंग में भारत का स्थान और घरेलू आतंरिक चुनौतियों पर चर्चा और इनके समाधान के बजाय सबसे बड़ा लोकतांत्रिक मंच संसद तमाशा बनी हुई है। सांसद देश की वास्तविक समस्याओं पर चर्चा करने के बजाय गरिमा को तार-तार करने में लगे हुए हैं। संसद के मौजूदा सत्र में लोकसभा में भारी हंगामे के दौरान कुछ सांसदों ने स्पीकर के आसन की ओर कागज फेंके, जिसके बाद उन्हें सत्र की बाकी अवधि के लिए निलंबित कर दिया गया।

यह कार्रवाई संसदीय कार्य मंत्री के प्रस्ताव पर हुई, जिसे सदन ने मंजूर कर लिया। दरअसल, राहुल गांधी को बोलने से रोके जाने पर विपक्षी दल भडक़ गए थे और हंगामा शुरू कर दिया था। इस मामले में कुल आठ सांसदों पर कार्रवाई हुई और उन्हें निलंबित कर दिया गया। लोकसभा में पीएम मोदी का अभिभाषण होना था, उनको धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा का जवाब देना था। इसके लिए पीएम मोदी लोकसभा में पहुंच भी चुके थे। लेकिन उनका अभिभाषण शुरू होने से पहले ही सदन की कार्यवाही गुरुवार सुबह 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। विपक्ष के हंगामे की वजह से सदन की कार्यवाही स्थगित की गई। भारत-यूएस ट्रेड डील पर केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने सरकार का पक्ष रखना शुरू किया था, तो विपक्षी सांसदों ने हंगामा शुरू कर दिया था। पीयूष गोयल ने इस दौरान कहा कि भारत और अमेरिका के बीच हुई ट्रेड डील में किसानों के हितों को सुरक्षित रक्षा गया है। इससे पहले राहुल गांधी आज फिर संसद में पूर्व आर्मी चीफ नरवणे की वो किताब लेकर पहुंचे। लोकसभा में लगातार हंगामा होता रहा। यही वजह है देश के युवा और उद्यमियों का लगातार भारत से मोह भंग हो रहा है। पिछले साल 2024 में भारत के दो लाख से भी ज्यादा अमीर लोगों ने भारतीय नागरिकता छोड़ दी। भारत छोडक़र विदेशों में बसने का चलन साल दर साल लगातार बढ़ रहा है।

आंकड़े बताते हैं कि देश के लोगों को भारत की लाइफस्टाइल और यहां की आबोहवा पसंद नहीं आ रही है, लेकिन उनको विदेशी धरती की लाइफस्टाइल ज्यादा लुभावनी और सुरक्षित लग रही है। साल 2024 में 2 लाख 6 हजार लोगों ने भारत की नागरिकता छोड़ दी। साल 2023 में 2 लाख 16 हजार 219 लोगों ने भारत की नागरिकता छोड़ दी थी। विशेषज्ञों का मानना है कि शिक्षा और नौकरियों के सीमित अवसर, सामाजिक असमानता और राजनीतिक माहौल लोगों को देश छोडऩे के लिए प्रेरित कर रहे हैं। देश के बजाय निहित राजनीतिक हितों को प्राथमिकता देने से समस्याओं का अंबार कम होने का नाम नहीं ले रहा है। इससे पहले कि हालात बेकाबू हों, देश के कर्णधार जिम्मेदारी का एहसास करें और देश की समस्याओं के निदान में गंभीरता दिखाएं।

प्रेरणा

वैराग्यः स्थिरता की परम संपदा

वैराग्य का अर्थ त्याग या पलायन नहीं है, बल्कि वह गहन समझ है जो जीवन को भीतर से शांत कर देती है। क्या आप किसी खुशी को बांधकर रख सकते हो? क्या बहुत अधिक हंसी, उत्साह और उत्तेजना को लंबे समय तक मन में समेटे रह सकते हो? कुछ देर बाद वही खुशी बोझ बनने लगती है। भीतर एक बेचैनी पैदा होती है, एक अनकहा दबाव, और मन चाहता है कि सब कुछ छोड़कर कुछ क्षण मौन में बैठ जाए। यदि ऐसा अनुभव कभी हुआ है, तो वही वैराग्य का पहला स्पर्श है। जिस दिन यह स्पष्ट हो जाए कि सुख भी अंततः कष्ट ही देता है, उसी दिन ज्ञान का अंकुर फूटता है। सुख का स्वभाव है कि वह उद्विग्नता और अशांति को जन्म देता है। जब यह सत्य भीतर उतर जाता है, उसी क्षण वैराग्य का पदार्पण होता है। तब मन को बाहरी उपलब्धियों से अधिक शांति और स्थिरता की आवश्यकता महसूस होने लगती है।

हम आधुनिक जीवन में अपनी संवेदनशीलता कहीं खो बैठे हैं। इसलिए हमें बार-बार और अधिक प्रसन्नता चाहिए। थोड़ी खुशी पर्याप्त नहीं लगती, हमें और चाहिए, दूसरों से अधिक चाहिए। यह लालसा हमें लगातार व्यग्र बनाए रखती है। हम एक व्यग्रता से दूसरी व्यग्रता की ओर भागते रहते हैं। निराशा का दुख भी व्यग्रता है और अत्यधिक प्रसन्नता का सुख भी व्यग्रता ही है। दोनों ही स्थितियां मन को अशांत करती हैं। जीवन इस व्यग्रता के झूले पर झूलता रहता है और संघर्ष निरंतर बना रहता है। वैराग्य इन दोनों से परे है। वैराग्य में व्यक्ति सुख और दुख, लाभ और हानि, प्रशंसा और निंदा—सबको समान भाव से देखता है। वैराग्य की अवस्था में बड़ी से बड़ी खुशी भी मन को उद्वेलित नहीं कर पाती। यही बुद्धत्व है। यदि स्वर्ग का सिंहासन भी सामने आ जाए, तब भी चित्त अपनी स्थिरता से डगमगाता नहीं। यही वास्तविक उपलब्धि है और इस उपलब्धि का रहस्य केवल वैराग्य है।

विधि-विधान सीखे जा सकते हैं, ध्यान की पद्धतियां अभ्यास से आती हैं, पर वैराग्य सिखाया नहीं जा सकता। यह किसी पुस्तक के पन्नों में नहीं मिलता। वैराग्य जीवन के अनुभवों से स्वयं प्रकट होता है या किसी सिद्ध गुरु के सान्निध्य में सहज रूप से खिल उठता है। यह भीतर से उपजने वाली समझ है। समय के साथ, भोग के अनुभवों के साथ, सुख-दुख की पुनरावृत्ति के साथ, एक दिन मन स्वयं कह देता है—अब बस। उस क्षण जो मौन उतरता है, वही वैराग्य है। इस पृथ्वी पर यदि कोई श्रेष्ठतम ग्रहणीय प्रज्ञा है, तो वह वैराग्य ही है। संसार की हर वस्तु को विचलित किया जा सकता है, हर व्यक्ति को डिगाया जा सकता है, पर वैराग्य को नहीं। हर चीज का सौदा संभव है, पर वैराग्य का नहीं। वैरागी और स्थितप्रज्ञ व्यक्ति भीतर से अडिग होते हैं। वही सच्ची समृद्धि के धनी हैं।

साधारण मनुष्य का मनोविश्लेषण करो। बीस-तीस लाख के लालच में वह पदच्युत हो सकता है, अपने सिद्धांतों को छोड़ सकता है, झूठ और अन्याय के लिए तैयार हो सकता है। पर वैरागी नहीं। यदि कोई आपसे कहे कि झूठ बोल दो और बदले में एक करोड़ रुपए मिलेंगे, तो मन तुरंत तर्क गढ़ने लगेगा। वह कहेगा—इसमें बुराई क्या है? हो सकता है इस झूठ से किसी का भला हो जाए। इतने पैसों से मैं समाज सेवा करूंगा, मानवता के लिए काम करूंगा। मन अपने स्वार्थ को धर्म का चोला पहना देगा। पर वैराग्य वहां मौन रहता है। वह जानता है कि झूठ चाहे किसी भी उद्देश्य से बोला जाए, वह झूठ ही है। वैराग्य तर्क नहीं देता, वह स्पष्ट देखता है।

संत कबीर से जुड़ी एक घटना इस सत्य को और गहराई से उजागर करती है। एक पंडित ने एक वेश्या से कहा कि वह कबीर के सत्संग में जाकर उनके बारे में झूठा संकेत दे, ताकि उनकी छवि धूमिल हो जाए। वह आत्मसम्मानी स्त्री थी, उसने पहले इंकार किया। लेकिन दो सोने की मोहरों का लालच दिया गया। उसे केवल इतना कहना था—प्रिय, इतने दिनों से हम मिले नहीं। जब उसने सत्संग में ऐसा कहा, तो कबीर का उत्तर अद्भुत था—मैं तो कब से तुम्हारी प्रतीक्षा में यहीं बैठा हूं, तुम अब तक कहां थी? आओ, बैठो, मैं भी तुम्हें याद कर रहा था। इस उत्तर ने सबको झकझोर दिया।

कबीर एक अनपढ़ जुलाहे थे, पर उनके माध्यम से ब्रह्मज्ञान प्रवाहित हो रहा था। फिर भी उस एक घटना के बाद कई लोगों ने उनके सत्संग में आना छोड़ दिया। क्योंकि उनका संबंध कबीर से केवल शब्दों तक सीमित था, अंतरंगता नहीं थी। एक घटना ने उनके विश्वास को तोड़ दिया। कबीर ने किसी को सफाई नहीं दी, किसी का विरोध नहीं किया। उन्होंने व्यवहार को भी सहजता से स्वीकार किया। बाद में वही वेश्या सत्य से विचलित न रह सकी और राजा के पास जाकर पूरी घटना बता दी। उसी क्षण से उसका जीवन परिवर्तित हो गया। वैराग्य से ही सच प्रकट होता है।

यदि किसी घटना का सत्य जानना हो, तो पूर्ण वैराग्य और शांति में स्थित हो जाओ। शांति कोई कमजोरी नहीं, बल्कि महान शक्ति है। वास्तविक आत्मीयता, वास्तविक करुणा और वास्तविक विवेक केवल वैराग्य में ही संभव है। वैराग्य जीवन से भागना नहीं सिखाता, बल्कि जीवन को पूरी तरह जीना सिखाता है—बिना आसक्ति, बिना भय और बिना लालच के। यही वैराग्य की परम गरिमा है।

व्यापार समझौते और किसान

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संसदीय संबोधन में खुलासा किया है कि भारत 9 देशों के साथ व्यापार समझौते कर चुका है और 24 देशों के साथ वार्ताएं जारी हैं। वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने भी संसद को बताया है कि भारत और खाड़ी देश सहयोग परिषद् के 6 देशों के बीच गुरुवार को 'मुक्त व्यापार समझौते' पर बातचीत शुरू करने की शर्तों पर सहमति बन गई है। इन देशों में संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, कतर, कुवैत, बहरीन और ओमान शामिल हैं। वाणिज्य मंत्री ने यह भी खुलासा किया है कि भारत-अमरीका का साझा बयान 4-5 दिन में सार्वजनिक हो जाएगा, जबकि मार्च मध्य में समझौते पर हस्ताक्षर होंगे। जाहिर है कि अभी बहुत कुछ तय होना है। सिर्फ दोनों देश सैद्धांतिक तौर पर सहमत हुए हैं। इस संदर्भ में विपक्ष का प्रलाप समझ के परे है। राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खडग़े ने यहां तक कह दिया कि समझौते से भारतीय किसान बर्बाद हो जाएंगे। किसी ने कहा कि रात के अंधेरे में किसानों के साथ विश्वासघात किया गया है। आखिर विपक्ष के नेता 'किसान-विरोधी समझौते' पर विलाप क्यों कर रहे हैं, जबकि केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान भी स्पष्ट कर चुके हैं कि कृषि और डेयरी क्षेत्रों को लेकर कोई समझौता नहीं किया गया है? किसान और पशुपालक पूरी तरह सुरक्षित और संरक्षित हैं। यथार्थ यह भी है कि कृषि के कई उत्पादों का भारत को आयात करना पड़ता है, क्योंकि हमारे किसान उतना उत्पादन नहीं कर सकते, जितनी खपत है। लोगों को तो चाहिए। हम दालें, सूखे मेवे, खाद्य तेल, फल और सब्जियों का 26 अरब डॉलर का आयात करते हैं। यानी विदेशी कंपनियां भारतीय बाजार में मौजूद हैं और अरबों डॉलर का व्यापार कर रही हैं। बेशक अमरीका से इन कृषि उत्पादों का आयात कम किया जाता है। यदि अमरीका से यह आयात सस्ता पड़ेगा, तो क्या हम समझौते से चिपके रहेंगे और अमरीका से ये उत्पाद नहीं खरीदेंगे? बेहद संवेदनशील सवाल है। चूंकि देश में इन उत्पादों की खपत है, जरूरत है, लिहाजा आयात करना 'राष्ट्रीय मजबूरी' है।

भारतीय स्टेट बैंक की एक रपट सामने आई है कि यदि अमरीका से डेयरी उत्पाद भारत में आए, तो यहां के दुग्ध उत्पादक किसानों को करीब 1,03,000 करोड़ रुपए का नुकसान होगा। क्या यह सटीक और व्यावहारिक रपट है? यह भी दलील दी जा रही है कि अमरीका में गायों को मांस और चर्बी आदि खिलाते हैं, लिहाजा उनके दूध में उसके प्रभाव भी शामिल होंगे और इस तरह असंख्य भारतीयों का धर्म भ्रष्ट हो सकता है। कुल मिला कर ऐसा प्रतीत होता है मानो कृषि और डेयरी क्षेत्र आज भी अपंग-अधूरे हैं। हालांकि भारत में दुग्ध कारोबार 7.5-9 लाख करोड़ रुपए का है। हम विश्व में सबसे बड़े दुग्ध उत्पादक देश होने का भी दावा करते रहे हैं। हमने दूध की कमी और संकट के दौर भी देखे और झेले हैं। भारत में 13 जनवरी, 1970 को जब 'ऑपरेशन फ्लड' का आगाज किया गया था, तो उसे दुनिया का सबसे बड़ा डेयरी विकास कार्यक्रम करार दिया गया था। उसे 'श्वेत क्रांति' का नाम भी दिया गया था, लेकिन उससे पहले भारत दूध की कमी वाला देश था। इस 'श्वेत क्रांति' के सूत्रधार थे-डॉ. वर्गीज कुरियन। लगभग ऐसा ही हाल कृषि का है। आजादी के 78 सालों के बाद भी सहस्र वर्षों पुरानी कृषि इस स्थिति में नहीं है कि विदेशी प्रतिस्पद्र्धा का मुकाबला कर सके। किसान भी गरीब है और सरकारी मदद के भरोसे रहता है, लिहाजा भारत को आज भी कृषि और किसान को संरक्षण देना पड़ रहा है। व्यापार समझौतों पर बातचीत के दौरान भारत को इन दो मुद्दों पर अड़े रहना पड़ता है। अलबत्ता यूरोपीय संघ और अमरीका के साथ व्यापार समझौते कभी के तय हो गए होते! किसान भारत की राजनीतिक बाध्यता भी हैं। इस वोट बैंक के दबाव के आगे सभी को झुकना पड़ता है। अमरीका की जीडीपी में कृषि का योगदान मात्र 1 फीसदी है और यूरोपीय संघ में 1.6 फीसदी है, लेकिन भारतीय जीडीपी में कृषि का योगदान आज भी 16.3 फीसदी है, लिहाजा यह बेहद संवेदनशील क्षेत्र है। भारत सरकार को इन पहलुओं पर विचार करते हुए कृषि को स्वायत्त और 'बड़ा बच्चा' बनने देना चाहिए। किसानों की केंद्र सरकार से कई अपेक्षाएं हैं, जिन्हें पूरा किया जाना चाहिए।

अभियान

देवगुरु बृहस्पति की रहस्यमयी साधना भूमि उत्तराखंड

देवभूमि उत्तराखंड की धरती को केवल पर्वतों और नदियों की भूमि कहना इसके आध्यात्मिक वैभव को कम करके आंकना होगा। यह वह क्षेत्र है जहां प्रकृति और चेतना एक-दूसरे में घुली हुई प्रतीत होती हैं। इसी देवभूमि के नैनीताल जिले में, ओखलकांडा क्षेत्र की ऊंची पहाड़ियों पर स्थित देवगुरु पर्वत एक ऐसा स्थान है, जहां देवताओं के गुरु बृहस्पति देव की तपस्थली मानी जाती है। समुद्र तल से लगभग आठ हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित यह स्थान आज भी अपने भीतर एक गहन रहस्य, मौन और अदृश्य ऊर्जा को संजोए हुए है। यहां पहुंचने वाला हर व्यक्ति केवल एक मंदिर नहीं देखता, बल्कि स्वयं के भीतर झांकने की यात्रा पर निकल पड़ता है।

देवगुरु पर्वत तक पहुंचते-पहुंचते रास्ता जैसे बाहरी दुनिया से धीरे-धीरे दूरी बना लेता है। घने जंगल, पहाड़ी रास्ते, बादलों से घिरी चोटियां और हवा में घुली शांति मन को अनायास ही शांत करने लगती है। यहां मोबाइल की घंटियां कम सुनाई देती हैं, लेकिन भीतर की आवाज़ स्पष्ट होने लगती है। यही कारण है कि यह स्थान सदियों से साधकों, विचारकों और मौन प्रेमियों को अपनी ओर खींचता रहा है। स्थानीय लोगों का विश्वास है कि यह पर्वत केवल भौगोलिक संरचना नहीं, बल्कि एक जीवित चेतना है, जो साधक के भाव के अनुसार स्वयं को प्रकट करती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, देवताओं और असुरों के संघर्ष के समय जब देवताओं के सामने मार्गदर्शन का संकट खड़ा होता था, तब देवगुरु बृहस्पति इस पर्वत पर आकर ध्यान और चिंतन करते थे। यहीं उन्होंने धर्म, नीति और विवेक के सूत्रों का मनन किया और देवताओं को सही दिशा प्रदान की। कहा जाता है कि उनकी कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें देवताओं का गुरु पद प्रदान किया और नवग्रहों में स्थान दिया। इस कारण यह स्थल केवल पूजा का केंद्र नहीं, बल्कि निर्णय, विवेक और संतुलन की ऊर्जा का स्रोत माना जाता है। इस पर्वत से जुड़ी लोककथाएं बताती हैं कि प्राचीन काल में अनेक ऋषि-मुनि यहां साधना के लिए आए। कुछ ने वर्षों तक मौन व्रत रखा, तो कुछ ने यहीं समाधि प्राप्त की। आज भी गांव के बुजुर्ग बताते हैं कि रात के समय पर्वत पर एक विशेष शांति उतर आती है, मानो पूरा क्षेत्र किसी अदृश्य ध्यान में लीन हो। कई लोगों का कहना है कि यहां ध्यान करते समय विचार स्वयं थम जाते हैं और मन बिना प्रयास के स्थिर हो जाता है। देवगुरु बृहस्पति को ज्ञान, बुद्धि, धर्म, नैतिकता और विस्तार का प्रतीक माना गया है। भारतीय ज्योतिष में गुरु ग्रह को जीवन का मार्गदर्शक कहा गया है। व्यक्ति की कुंडली में गुरु की स्थिति उसके विचार, निर्णय, शिक्षा, विवाह और आध्यात्मिक झुकाव को प्रभावित करती है। इसी विश्वास के चलते यहां दूर-दूर से श्रद्धालु आते हैं, विशेष रूप से वे लोग जिनकी कुंडली में गुरु दोष बताया जाता है या जो जीवन में स्थिरता और स्पष्टता की तलाश में होते हैं। लोगों का अनुभव है कि यहां की प्रार्थना केवल ग्रहों को नहीं, बल्कि मन को भी संतुलित करती है। यह मंदिर विद्यार्थियों और ज्ञान साधकों के लिए विशेष महत्व रखता है। परीक्षा, प्रतियोगिता, शोध कार्य या जीवन की किसी नई शुरुआत से पहले यहां आकर आशीर्वाद लेने की परंपरा है। माना जाता है कि देवगुरु बृहस्पति की कृपा से बुद्धि तीव्र होती है और विवेक जागृत होता है। कई श्रद्धालु यह भी कहते हैं कि यहां आने के बाद उनके निर्णय अधिक स्पष्ट और निर्भीक हुए हैं, मानो भीतर कोई मार्गदर्शक जाग उठा हो।

हर बृहस्पतिवार को मंदिर परिसर में विशेष आध्यात्मिक वातावरण देखने को मिलता है। श्रद्धालु पीले वस्त्र धारण कर पीले फूल, चने की दाल, गुड़ और अन्य पीले पदार्थ अर्पित करते हैं। मंत्रोच्चार और घंटियों की ध्वनि के बीच पर्वत जैसे किसी अदृश्य ऊर्जा से स्पंदित होने लगता है। उस दिन यहां की शांति और भी गहरी हो जाती है। यह अनुभव केवल धार्मिक नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप से भी शांति प्रदान करने वाला होता है।

देवगुरु पर्वत की यात्रा अपने आप में एक साधना है। हल्द्वानी या काठगोदाम से भीमताल होते हुए ओखलकांडा तक का रास्ता सुंदर दृश्यों से भरा है। अंतिम हिस्से में मंदिर तक पहुंचने के लिए पैदल चढ़ाई करनी पड़ती है। यह चढ़ाई शरीर को थकाती जरूर है, लेकिन मन को हल्का कर देती है। हर कदम के साथ सांस तेज होती है और विचार धीमे पड़ जाते हैं। ऊपर पहुंचते ही जो दृश्य सामने आता है, वह मानो सारी थकान हर लेता है। स्थानीय ग्रामीण इस मंदिर को अपने जीवन का अभिन्न अंग मानते हैं। विवाह, गृह प्रवेश, शिक्षा आरंभ या किसी नए कार्य की शुरुआत से पहले देवगुरु बृहस्पति का आशीर्वाद लेना यहां की परंपरा है। उनका विश्वास है कि गुरु की कृपा के बिना जीवन में संतुलन नहीं आता। यही कारण है कि यह मंदिर केवल श्रद्धा का केंद्र नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का भी आधार है।

देवगुरु पर्वत की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सादगी और मौन है। यहां कोई दिखावा नहीं, कोई शोर नहीं, केवल प्रकृति और चेतना का संवाद है। यह स्थान सिखाता है कि सच्चा ज्ञान बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि भीतर की स्थिरता में है। देवगुरु बृहस्पति की यह साधना भूमि आज भी उसी उद्देश्य के साथ जीवित है—मनुष्य को विवेक, संतुलन और सत्य की ओर ले जाना। यहां से लौटते समय व्यक्ति केवल एक यात्रा पूरी नहीं करता, बल्कि अपने भीतर एक नई दृष्टि लेकर लौटता है, जो लंबे समय तक उसके जीवन को दिशा देती रहती है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

एफटीए और बजट की जुगलबंदी से भारतीय टेक्सटाइल सेक्टर को वैश्विक उड़ान

(जीएनएस)। सूरत। भारतीय टेक्सटाइल इंडस्ट्री के लिए आने वाला समय बेहद निर्णायक और अवसरों से भरा माना जा रहा है। अमेरिका, यूरोपियन यूनियन और यूनाइटेड किंगडम के साथ प्रस्तावित या संभावित फ्री ट्रेड एग्रीमेंट तथा हालिया केंद्रीय बजट का संयुक्त प्रभाव भारत को ग्लोबल टेक्सटाइल सप्लाई चेन में एक मजबूत और प्रतिस्पर्धी खिलाड़ी के रूप में स्थापित कर सकता है। इस समग्र परिदृश्य पर अपने विचार रखते हुए प्रतिष्ठित कपड़ा कारोबारी गिरधर गोपाल मूंदड़ा ने कहा कि इन दोनों कारकों के मिलकर असर से भारत के लिए लगभग 45 लाख करोड़ रुपये के अंतरराष्ट्रीय टेक्सटाइल बाजार के दरवाजे खुल सकते हैं।

उन्होंने बताया कि वर्तमान स्थिति में EU, UK और USA जैसे बड़े उपभोक्ता बाजारों में भारतीय टेक्सटाइल और गारमेंट्स पर 8 से 12 प्रतिशत तक आयात शुल्क लगाया जाता है। इसके विपरीत बांग्लादेश, वियतनाम और कुछ अन्य देशों को ड्यूटी फ्री या रियायती टैरिफ का लाभ मिलता है, जिससे वे कीमत के स्तर पर भारतीय उत्पादों से आगे निकल जाते हैं। यदि भारत के साथ इन देशों के एफटीए लागू होते हैं, तो भारतीय टेक्सटाइल उत्पादों पर लगने वाली यह ड्यूटी कम हो सकती है या पूरी तरह समाप्त भी हो सकती है। इससे रेडीमेड गारमेंट्स, होम टेक्सटाइल, मैन-मेड फाइबर आधारित फैब्रिक और टेक्निकल टेक्सटाइल जैसे सेगमेंट में भारतीय उत्पाद अंतरराष्ट्रीय बाजार में कहीं अधिक प्रतिस्पर्धी बन जाएंगे। इसका सीधा असर निर्यात ऑर्डर्स में वृद्धि और EU, UK व USA में भारत के मार्केट शेयर के विस्तार के रूप में देखने को मिलेगा।

गिरधर गोपाल मूंदड़ा के अनुसार, जहां एफटीए विदेशी बाजारों में भारत के लिए नए अवसर पैदा करेगा, वहीं हालिया केंद्रीय बजट देश के भीतर टेक्सटाइल सेक्टर की नींव को मजबूत करने का काम करता है। बजट में PM MITRA टेक्सटाइल पार्क, PLI स्कीम, टेक्निकल टेक्सटाइल को बढ़ावा देने के लिए सेंटर्स ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना, आसान और सुलभ क्रेडिट व्यवस्था, इंफ्रास्ट्रक्चर सुधार तथा लॉजिस्टिक्स लागत कम करने जैसे अहम प्रावधान किए गए हैं। इन पहलों से उद्योग की उत्पादन क्षमता बढ़ेगी, आधुनिक तकनीक को अपनाने में तेजी आएगी और उत्पादों की गुणवत्ता अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बनेगी। इससे केवल कच्चे कपड़े तक सीमित रहने के बजाय वैल्यू-एडेड गारमेंट्स और फिनिश्ड प्रोडक्ट्स के निर्यात को भी नई गति मिलेगी।

उन्होंने यह भी कहा कि एफटीए और बजट का संयुक्त प्रभाव निवेश के माहौल को बेहतर बनाएगा। देश में नई टेक्सटाइल यूनिट्स स्थापित होंगी, मौजूदा इकाइयों का विस्तार होगा और बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर सृजित होंगे। सूरत, तिरुपुर, लुधियाना, भीलवाड़ा और पनिपत जैसे प्रमुख टेक्सटाइल क्लस्टर्स को इसका विशेष लाभ मिलने की संभावना है, जहां पहले से ही मजबूत औद्योगिक आधार मौजूद है। हालांकि मूंदड़ा ने यह भी स्वीकार किया कि इस सकारात्मक तस्वीर के बावजूद कुछ चुनौतियां बनी रहेंगी। MSME सेक्टर पर वर्किंग कैपिटल का दबाव, लंबा पेमेंट साइकिल और अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण एवं श्रम मानकों का सख्त अनुपालन उद्योग के लिए कठिनाइयाँ पैदा कर सकता है। इसके बावजूद, यदि नीतियों का सही, समयबद्ध और प्रभावी क्रियान्वयन किया गया, तो एफटीए और बजट मिलकर भारतीय टेक्सटाइल इंडस्ट्री को तेज, टिकाऊ और निर्यात-आधारित विकास की दिशा में आगे ले जाने में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

महिला उद्यमियों के आत्मविश्वास और नेटवर्किंग को मिला नया मंच, चैंबर के WEC ने आयोजित की बिज़नेस प्रेजेंटेशन मीटिंग

(जीएनएस)। सूरत। सदर्न गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के विमेन एंटरप्रेन्योर्स सेल द्वारा महिला उद्यमियों को सशक्त बनाने और उन्हें एक-दूसरे से जोड़ने के उद्देश्य से एक प्रभावशाली बिज़नेस प्रेजेंटेशन मीटिंग का आयोजन किया गया। शुक्रवार, 6 फरवरी 2026 को शाम 5:30 बजे अमोरे, सूरत में आयोजित इस कार्यक्रम में फीचर प्रेजेंटेशन के साथ बिज़नेस, नेटवर्किंग और भविष्य की रणनीतियों पर सार्थक संवाद देखने को मिला।

कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर चैंबर ऑफ कॉमर्स के प्रेसिडेंट निखिल मद्रासी ने अपने प्रेरक संबोधन में कहा कि बिज़नेस में आत्मनिर्भरता और नेटवर्किंग सबसे बड़ी ताकत होती है। उन्होंने कहा कि यदि कोई व्यक्ति दूसरों पर पूरी तरह निर्भर रहता है तो वह आगे नहीं बढ़ पाता, लेकिन जो अपना रास्ता खुद बनाता है वही सफलता की ओर तैरता है। नेटवर्किंग का असली अर्थ बताते हुए उन्होंने कहा कि यह सिर्फ परिचय तक सीमित नहीं है, बल्कि एक-दूसरे को अवसर देने की भावना है। जब आप किसी को बिज़नेस का अवसर देते हैं, तो वही व्यक्ति आगे चलकर आपको भी सहयोग देने की कोशिश करता है।

निखिल मद्रासी ने महिला उद्यमियों को आउट ऑफ द बॉक्स सोचने की सलाह देते हुए कहा कि वही काम करें जिसमें उन्हें रुचि हो और जिसमें वे खुद को देख सकें। उन्होंने कहा कि ज़िंदगी में अपनी लड़ाई हर किसी को खुद ही लड़नी पड़ती है, इसलिए किसी की नकल करने के बजाय अपना अलग ब्रांड बनाना ज़रूरी है। उन्होंने जीवन को जन्म और मृत्यु के बीच का एक सुंदर सफर बताते हुए हर पल को पूरे उत्साह के साथ जीने का संदेश दिया। साथ ही उन्होंने अर्थव्यवस्था के विकास में महिलाओं की भूमिका की सराहना करते हुए आश्वासन दिया कि चैंबर महिला उद्यमियों को मार्गदर्शन और सहयोग देने के लिए हमेशा तत्पर रहेगा।

कार्यक्रम की शुरुआत विमेन एंटरप्रेन्योर्स सेल की चेयरपर्सन मिस अंकिता वालंद के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने कहा कि महिला सशक्तिकरण आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। किसी भी एंटरप्रेन्योर के लिए शुरुआती दौर में एक मज़बूत प्लेटफॉर्म बेहद ज़रूरी होता है और चैंबर ने महिला सदस्यों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से ऐसा ही मंच उपलब्ध कराया है। उन्होंने महिला उद्यमियों से इस अवसर का भरपूर लाभ उठाने और अपने बिज़नेस को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का आह्वान किया।

सप्ताह के दौरान सोना वायदा 31891 रुपये और चांदी वायदा में 156078 रुपये लुढ़काः क्रूड ऑयल वायदा 286 रुपये फिसला

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर 30 जनवरी से 5 फरवरी के सप्ताह के दौरान कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस में 2370030.86 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 766390.58 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 1603582.26 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का फरवरी वायदा 37473 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 68436.9 करोड़ रुपये का हुआ। आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 595099.04 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा सप्ताह के आरंभ में 180499 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 183493 रुपये और नीचे में 137065 रुपये पर पहुंचकर, 183962 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 31891 रुपये या 17.34 फीसदी लुढ़ककर 152071 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ। गोल्ड-गिनी फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 23355 रुपये या 15.69 फीसदी गिरकर 125512 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 3108 रुपये या 16.58 फीसदी लुढ़ककर 15638 रुपये प्रति 1 ग्राम बंद हुआ। सोना-मिनी मार्च वायदा सप्ताह के आरंभ में 175259 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 179000 रुपये और नीचे में 131607 रुपये पर पहुंचकर, सप्ताह के अंत में 29816 रुपये या 16.55 फीसदी औंधकर 150316 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-टेन फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में प्रति 10 ग्राम 182600 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 185000 रुपये और नीचे में 134397 रुपये पर पहुंचकर, 184425 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 30578 रुपये या 16.58 फीसदी गिरकर 153847 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा सप्ताह के आरंभ में 383898 रुपये के भाव पर खूलकर, 389986 रुपये के उच्च और 225805 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 399893 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 156078 रुपये या 39.03 फीसदी की गिरावट के साथ 243815 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा सप्ताह के अंत में चांदी-मिनी फरवरी वायदा 158733 रुपये या 38.65 फीसदी घटकर 251971 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 159214 रुपये या 38.73 फीसदी गिरकर सप्ताह के अंत में 251845 रुपये प्रति किलो हुआ। मेटल वर्ग में 69173.01 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 183.5 रुपये या 13 फीसदी औंधकर 1228 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि जस्ता फरवरी वायदा 20.5 रुपये या 6.02 फीसदी औंधकर सप्ताह के अंत में 320.25 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इसके सामने एल्यूमीनियम फरवरी वायदा 34.2 रुपये या 10.01 फीसदी घटकर 307.3 रुपये प्रति किलो के भाव पर सप्ताह के अंत में बंद हुआ। जबकि सीसा फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 12 रुपये या 5.95 फीसदी की गिरावट के साथ 189.65 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ।

कमोडिटी वायदाओं में 766390 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 1603582 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 595099 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 37473 पॉइंट के स्तर पर

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 43608.60 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 5938 रुपये के भाव पर खूलकर, 6087 रुपये के उच्च और 5515 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 286 रुपये या 4.74 फीसदी लुढ़ककर 5746 रुपये प्रति बैरल बंद हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 284 रुपये या 4.71 फीसदी गिरकर 5747 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 354.9 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 402.3 रुपये के उच्च और 286.5 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 352 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 34.7 रुपये या 9.86 फीसदी लुढ़ककर 317.3 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बंद हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी फरवरी वायदा 34.4 रुपये या 9.79 फीसदी औंधकर सप्ताह के अंत में 317.1 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया। कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 997 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के अंत में 8.6 रुपये या 0.87 फीसदी गिरकर 983.5 रुपये प्रति किलो हुआ।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान सोना के विभिन्न अनुबंधों में 346500.61 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 248598.43 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 59318.70 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 4748.91 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 464.86 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 4640.54 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 11695.23 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 31809.50 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सप्ताह के अंत में सोना के वायदाओं में 8166 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 45628 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 15434 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 205085 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 26298 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 6152 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 12768 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 31666 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 11869 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 10943 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स फरवरी वायदा 48300 पॉइंट पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 51199 के उच्च और 34994 के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 11860 पॉइंट घटकर 37473 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ।

केशोद में AAP विधायक गोपाल इटालिया और फ्रंटल संगठन के प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण राम की विशेष उपस्थिति में "किसान संवाद कार्यक्रम" आयोजित किया गया

- एक प्रवीणभाई को जेल में डालोगे तो 500 प्रवीणभाई तैयार होंगे: गोपाल इटालिया
- प्रवीणभाई की अग्नि परीक्षा ली गई और वे पूरे अंकों के साथ पास हुए: गोपाल इटालिया
- आजादी की लड़ाई के समय अंग्रेज भी भाजपा नेताओं की तरह ही सोचते होंगे: गोपाल इटालिया
- भाजपा नेताओं को भी यह भ्रम है कि अगर AAP के नेताओं को जेल में डाल देंगे तो गुजरात में भाजपा ही चलती रहेगी, लेकिन ऐसा कुछ होने वाला नहीं है: गोपाल इटालिया
- पहली बार भाजपा के सामने खड़े होने वाले युवा मैदान में उतरे हैं और इसी वजह से अब भाजपा वाले परेशान हो गए हैं: गोपाल इटालिया
- पूरे गुजरात का भरोसा अब AAP पार्टी पर है: गोपाल इटालिया
- हम पर जो झूठे केस किए गए, वह गुजरात के किसानों को पसंद नहीं आए: प्रवीण राम
- मैं इकोज़ोन मुद्दे पर, घेड मुद्दे पर, किसानों के मुद्दे पर आवाज उठाता हूं, इसी वजह से मुझे जेल में डाला गया: प्रवीण राम
- जो लोग वीडियो में पत्थर फेंकते हुए दिखाई दे रहे हैं, उन लोगों में से एक पर भी पुलिस शिकायत दर्ज नहीं की गई: प्रवीण राम
- हडदड में भाजपा द्वारा किया गया षड्यंत्र था: प्रवीण राम
- मैंने किसानों से बैठकर रहने को कहा और शांति की अपील भी की: प्रवीण राम
- जिन लोगों ने हमें जेल में डाला, उन्होंने हमें और मजबूत किया: प्रवीण राम
- घेड और किसानों सहित पिछली सभी लड़ाइयां फिर से शुरू होंगी: प्रवीण राम
- अहमदाबाद/जूनागढ़/सुरेंद्रनगर/बोटाद/राजकोट/अमरेली/देवभूमि द्वारका/गिर सोमनाथ/पोरबंदर/गुजरात

(जीएनएस)। आम आदमी पार्टी के किसान नेता और फ्रंटल संगठन के प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण राम 108 दिनों की जेलवास के बाद बाहर आए हैं और किसानों सहित पूरे गुजरात के लोगों के लिए अपनी मजबूत आवाज उठाने के लिए तैयार हैं। विसावदर के विधायक गोपाल इटालिया के साथ किसान नेता प्रवीण राम ने आज केशोद में "किसान संवाद" कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय लोग, किसान, आम आदमी पार्टी के पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में विधायक गोपाल इटालिया ने कहा कि आजादी की लड़ाई के दौरान अंग्रेज भी भाजपा नेताओं की तरह ही सोचते होंगे कि "अगर आजादी की बात लेकर निकलने वालों को जेल में डाल दिया जाए तो आजादी की बात ही बंद हो जाएगी।" इसी सोच के साथ अंग्रेजों ने हमारे देश के कई महापुरुषों और स्वतंत्रता सेनानियों को जेल में डाला, फिर भी आजादी आई। भाजपा नेताओं को भी यह भ्रम है कि अगर आम आदमी पार्टी के नेताओं को जेल में डाल देंगे तो गुजरात में भाजपा ही चलती रहेगी, लेकिन ऐसा कुछ होने वाला नहीं है। क्योंकि अगर आप एक प्रवीण राम को जेल में डालोगे तो 500 प्रवीण राम तैयार होंगे, अगर आप एक राजू करपड़ा को जेल में डालोगे तो 500 राजू करपड़ा तैयार होंगे।

आगे विधायक गोपाल इटालिया ने कहा कि अब तक भाजपा और कांग्रेस के नेता एक-दूसरे का काम करते थे और अंदरखाने पार्टी बदलते रहते थे, जिसके कारण जनता का कोई काम नहीं होता था। उन्होंने कभी भी गुजरात के आम लोगों और खासकर किसानों की आवाज नहीं सुनी। लेकिन अब गुजरात में और देश में आम आदमी पार्टी खड़ी हुई और एक तरफ से ईसुदानभाई आए, एक तरफ से मैं आया, एक तरफ से प्रवीणभाई आए, एक तरफ से चैतरभाई आए और इस तरह कई लोग आम आदमी पार्टी से जुड़े और भगवान के आशीर्वाद से गुजरात में आम आदमी पार्टी का मजबूत काम हुआ। इसलिए पूरे गुजरात की उम्मीद और भरोसा आम आदमी पार्टी पर टिका है। अब तक भाजपा को चुनौती देने वाला कोई नहीं था, लेकिन अब पहली बार भाजपा के सामने खड़े होने वाले युवा मैदान में आए हैं और इसी वजह से भाजपा वाले परेशान हो गए हैं। और अगर आगे भी गुजरात की जनता का आशीर्वाद मिला तो भाजपा वाले हाथ में भी नहीं आएंगे।

इसके बाद आम आदमी पार्टी के किसान नेता प्रवीण राम ने अपने संबोधन में कहा कि 108 दिनों की जेलवास के दौरान केशोद की जनता सहित पूरे गुजरात की जनता ने जिस तरह मुझे और मेरे परिवार को समर्थन दिया, उन सभी लोगों का मैं धन्यवाद करता हूं। हम पर जो झूठे केस किए गए, वह गुजरात के किसानों को पसंद नहीं आए। मुझे किसी व्यक्तिगत लड़ाई के कारण जेल में नहीं डाला गया, बल्कि मैं इकोज़ोन की लड़ाई लड़ता हूं, घेड मुद्दे पर लड़ाई लड़ता हूं, किसानों की आवाज उठाता हूं, इसी वजह से मुझे जेल में डाला गया। उन्हें लगा कि हमें जेल में डालकर वे हमें कमजोर कर देंगे, लेकिन मैं सभी से कहना चाहता हूं कि हमें जेल में डालकर आप लोगों ने हमें और मजबूत किया है और भगवान करे कि आप लोग सौ साल जिएं।

इसके बाद किसान नेता प्रवीण राम ने हडदड में हुई घटना के बारे में बात करते हुए कहा कि हडदड गांव में मैंने अपनी बात पूरी की और राजूभाई करपड़ा ने भी अपनी बात पूरी की और बस कार्यक्रम खत्म होने ही वाला था। उसी समय पुलिस आती है और मैंने किसानों से बैठकर रहने को कहा तथा शांति की अपील की। लेकिन पुलिस वापस चली जाती है और कुछ मिनट बाद फिर लौट आती है और हमने फिर से लोगों से बैठने की अपील की। तीसरी बार जब पुलिस आई तो हेलमेट और लाठियों के साथ आई। इसके बाद पुलिस भीड़ में घुस गई। वहां जो वरिष्ठ पुलिस अधिकारी मौजूद थे, उनकी विवेकबुद्धि कहां चली गई? क्या पुलिस ने उकसाया नहीं? और भी गंभीर बात यह है कि जिन लोगों को उन्होंने भेजा, उनमें से कुछ ने पत्थरबाजी की, जिनमें भाजपा के लोग भी थे। इस पूरी घटना के बाद जिन 85 लोगों पर पुलिस शिकायत दर्ज की गई, उनमें से एक भी व्यक्ति पत्थर फेंकता हुआ नहीं था। इन 85 लोगों के पत्थर फेंकने का एक भी वीडियो पुलिस के पास नहीं था, तो फिर पुलिस ने इन लोगों को कैसे गिरफ्तार किया? दूसरी चौंकाने वाली बात यह है कि जो लोग वीडियो में पत्थर फेंकते हुए दिखाई दे रहे हैं, उन पर एक भी पुलिस शिकायत दर्ज नहीं की गई। इससे स्पष्ट होता है कि यह भाजपा द्वारा किया गया षड्यंत्र था।

सूट-बूट में 'रेड' का ड्रामा, वराछा में पकड़ा गया फर्जी इनकम टैक्स अफसर

(जीएनएस)। सूरत। वराछा इलाके में शुक्रवार को वह नज़ारा देखने को मिला, जो अब तक लोग सिर्फ फिल्मों में देखते आए थे। अक्षय कुमार की फिल्म 'स्पेशल 26' की तर्ज पर एक शख्स सूट-बूट, टाई और ब्रांडेड चश्मा पहनकर खुद को इनकम टैक्स अधिकारी बताता हुआ व्यापारियों के बीच आ धमका और 'रेड' के नाम पर लाखों रुपये ऐंठने की कोशिश करने लगा। हालांकि, व्यापारी की सूझबूझ और पुलिस की सतर्कता के चलते यह पूरा फिल्मी खेल ज्यादा देर नहीं चल पाया और आरोपी को रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया गया।

पुलिस के अनुसार, आरोपी की पहचान राजस्थान के पाली जिले के रहने वाले 51 वर्षीय विजयसिंह चौहान के रूप में हुई है। वह पूरी तैयारी के साथ वराछा के ग्लोबल टेक्सटाइल मार्केट पहुंचा था। आंखों पर एविएटर गॉगल्स, गले में टाई, हाथ में कोट और इनकम टैक्स विभाग से जुड़ी फर्जी फाइलें लेकर उसने ऐसा माहौल बनाया कि पहली नजर में कोई भी उसे असली अधिकारी समझ बैठता। मार्केट में घुसते ही उसने टैक्स चोरी की बातें फैलानी शुरू कीं और एक व्यापारी की दुकान पर 'रेड' के अंदाज में प्रवेश किया।

आरोपी ने व्यापारी को गंभीर टैक्स गड़बड़ी में फंसाने की धमकी दी और मामले को "सेट" करने के लिए 30 लाख रुपये की मांग कर डाली। काफी देर तक मोलभाव चलता रहा और आखिरकार रकम 4 लाख रुपये पर तय हो गई। इसी दौरान आरोपी की बातों में जरूरत से ज्यादा दिखावा और उसकी 'ओवर-एक्टिंग' ने व्यापारी के मन में शक पैदा कर दिया। व्यापारी ने हिम्मत और समझदारी दिखाते हुए बिना घबराए तुरंत वराछा पुलिस को सूचना दे दी।

पुलिस को जानकारी मिली कि आरोपी पैसे लेने के लिए ब्लिस होटल आने वाला है। इसके बाद पुलिस ने पूरी रणनीति के साथ जाल बिछाया। जैसे ही विजयसिंह चौहान होटल पहुंचा और पैसे लेने की कोशिश करने लगा, पुलिस ने उसे मौके पर ही दबोच लिया। खाकी वर्दी देखते ही उसका सारा रौब और फिल्मी अंदाज पल भर में खत्म हो गया।

पुलिस जांच में सामने आया है कि आरोपी ग्रेजुएट है और पहले राजस्थान के पाली में टैक्स से जुड़े रिटेल काम से जुड़ा रह चुका है। इसी वजह से उसे इनकम टैक्स विभाग की कार्यप्रणाली, भाषा और कागजी औपचारिकताओं की अच्छी जानकारी थी, जिसका वह गलत फायदा उठाकर लोगों को डराने की कोशिश कर रहा था। चौंकाने वाली बात यह भी है कि वह राजस्थान से सूरत आने के महज 24 घंटे के भीतर ही इस बड़ी ठगी को अंजाम देने निकल पड़ा था।

पुलिस पूछताछ में आरोपी ने यह दावा भी किया है कि वह असली अधिकारियों के लिए 'मुखबिर' के तौर पर काम करता है। हालांकि, पुलिस इस दावे की गहनता से जांच कर रही है और उसके पुराने रिकॉर्ड व संपर्कों को भी खंगाला जा रहा है।

वराछा पुलिस ने इस घटना के बाद व्यापारियों और आम नागरिकों से सतर्क रहने की अपील की है। पुलिस का कहना है कि यदि कोई व्यक्ति खुद को सरकारी अधिकारी बताकर डराने-धमकाने या पैसों की मांग करता है, तो सबसे पहले उससे आधिकारिक पहचान पत्र मांगें और उसकी पुष्टि करें। किसी भी तरह का संदेह होने पर तुरंत स्थानीय पुलिस स्टेशन या उच्च अधिकारियों को सूचना दें और घबराहट में आकर किसी भी संदिग्ध व्यक्ति को नकद राशि न सौंपें।

जागरूकता बनी दृष्टि की रोशनी, लायंस क्लब की पहल से लोक दृष्टि आई बैंक को मिला एक और नेत्रदान

(जीएनएस)। सूरत। समाज में नेत्रदान को लेकर फैली भ्रांतियों को दूर करने और लोगों को इस महादान के लिए प्रेरित करने में लायंस क्लब द्वारा की जा रही निरंतर जन-जागरूकता एक बार फिर सार्थक सिद्ध हुई है। लायंस क्लब ऑफ उदवाड़ा एवं लायंस क्लब ऑफ सूरत ईस्ट के संयुक्त प्रयासों के सकारात्मक परिणामस्वरूप लोक दृष्टि आई बैंक को एक और नेत्रदान प्राप्त हुआ, जिससे किसी जरूरतमंद की दुनिया फिर से रोशन होने की उम्मीद जगी है। सूरत के ओलपाड क्षेत्र स्थित निवास स्थान पर लायन पूनम खिलोसिया के पूज्य पिताश्री स्वर्गीय छोटालाल मकवाणा का हाल ही में निधन हो गया। अपने जीवनकाल में ही उन्होंने यह दृढ़ संकल्प लिया था कि मृत्यु के पश्चात उनके नेत्रदान किए जाएँ, ताकि किसी अन्य व्यक्ति को नई दृष्टि मिल सके। उनके इस संकल्प को परिवारजनों ने पूरी संवेदनशीलता और सम्मान के साथ पूरा किया।

इस पुण्य कार्य को विधिवत संपन्न कराने के लिए लायंस क्लब डिस्ट्रिक्ट 3232F2 के पूर्व रीजन चेयरमैन लायन कीर्ति खिलोसिया ने डिस्ट्रिक्ट के फर्स्ट वाइस डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन हेमल पटेल से संपर्क कर नेत्रदान की संपूर्ण प्रक्रिया को लेकर आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया। इसके पश्चात लायंस क्लब ऑफ सूरत ईस्ट के अध्यक्ष लायन किशोर मांगरोलिया के सहयोग से लोक दृष्टि आई बैंक के माध्यम से नेत्रदान की प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरी कराई गई।

लोक दृष्टि आई बैंक की ओर से नेत्रदान ग्रहण करने की सेवा लायन डॉ. प्रफुल्ल शिरोया, लायन दिनेश पटेल एवं जीतू किहला द्वारा पूरी संवेदनशीलता और मानवीय भावनाओं के साथ प्रदान की गई। इस दौरान पूरे वातावरण में सेवा, करुणा और परोपकार की भावना स्पष्ट रूप से झलकती रही।

इस अवसर पर लायंस क्लब ऑफ उदवाड़ा एवं लायंस क्लब ऑफ सूरत ईस्ट के लायन साथियों ने स्वर्गीय छोटालाल मकवाणा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि नेत्रदान जैसे महादान से न केवल किसी अंधकारमय जीवन में रोशनी आती है, बल्कि यह समाज के लिए एक सशक्त प्रेरणा भी बनता है। लायंस क्लब के पदाधिकारियों ने आशा व्यक्त की कि इस तरह की जागरूकता से और अधिक लोग आगे आएँगे और नेत्रदान जैसे मानवीय कार्य को अपनाकर समाज के प्रति अपना दायित्व निभाएँगे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा तथा मार्गदर्शन से आद्यशक्ति धाम अंबाजी का होलिस्टिक तथा फ्युचरिस्टिक डेवलपमेंट हो रहा है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अंबाजी में मुख्य मंदिर, गब्बर तथा मानसरोवर को जोड़ने वाला 'शक्ति कॉरिडोर' के निर्माण में प्रथम चरण के 950 करोड़ रुपए के विभिन्न कार्यों का शिलान्यास किया

▸▸ प्रथम चरण के निर्माण में मल्टी लेवल पार्किंग, अंडर पास रोड, यात्री निवास, पाथ-वे, शक्ति पथ, शक्ति कॉरिडोर- एम्फीथियेटर सहित अनेक सुविधाएं

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शनिवार को आद्यशक्ति धाम अंबाजी में कुल 1,632 करोड़ रुपए के अनुमानित खर्च से निर्मित होने वाले अंबाजी कॉरिडोर के प्रथम चरण के 950 करोड़ रुपए के विभिन्न विकास कार्यों का शिलान्यास सम्पन्न किया।

आगामी 25 वर्षों के यात्री सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए अंबाजी में 'शक्ति कॉरिडोर' के लिए 1,632 करोड़ रुपए का विजनरी मास्टर प्लान तैयार किया गया है।

मुख्यमंत्री ने अंबाजी कॉरिडोर के प्रथम चरण के जिन कार्यों का शिलान्यास किया है, उससे आने वाले दिनों में यात्रियों को मल्टी लेवल पार्किंग, अंडरपास रोड, यात्री निवास, पाथ-वे, दिव्य दर्शन चौक, शक्तिपीठ, एम्फीथिएटर और लाइट एंड साउंड शो सहित अनेक पर्यटन सुविधाएं मिलेंगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस गौरवशाली समारोह की अध्यक्षता करते हुए स्पष्ट रूप से कहा कि आद्यशक्ति के परम उपासक प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में आद्यशक्ति पीठ अंबाजी का होलिस्टिक और फ्यूचरिस्टिक विकास हो रहा है।

मुख्यमंत्री के साथ इन बहुविध विकास कार्यों के शिलान्यास अवसर पर राज्य मंत्रिमंडल के सदस्य : प्रवीणभाई माळी, डॉ. जयरामभाई गामित, कमलेशभाई पटेल, स्वरूपजी ठाकोर तथा बनासकांठा जिले के विधायक एवं पदाधिकारी भी शामिल हुए।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आद्यशक्ति की आराधना और 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' से लेकर देश के तीर्थ स्थलों के नवीनीकरण के कार्य 'विकास भी विरासत भी' के मंत्र के साथ प्रारंभ किए हैं।

काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, महाकाल लोक, केदारनाथ और बैजनाथ धाम जैसे पवित्र स्थलों के विकास को नई पहचान मिली है। उनके नेतृत्व में अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण और पावागढ

में पांच सौ वर्षों बाद ध्वजारोहण जैसी ऐतिहासिक घटनाएं भी सम्पन्न हुई हैं।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि 51 शक्तिपीठों में विशिष्ट स्थान रखने वाले अंबाजी धाम के विकास के लिए प्रधानमंत्री का विजन साकार हो रहा है। हर वर्ष 51 शक्तिपीठ परिक्रमा महोत्सव का सफल आयोजन किया जाता है, जिसमें लाखों श्रद्धालु माता जी के दर्शन का लाभ लेते हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि हाल ही में आयोजित परिक्रमा महोत्सव में पांच लाख से अधिक भक्तों ने भाग लिया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ आगामी 25 वर्षों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए अंबाजी का विजनरी मास्टर प्लान तैयार किया गया है

▸▸ प्रधानमंत्री ने पवित्र तीर्थ क्षेत्र 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' से लेकर देश के तीर्थ स्थलों का नवीनीकरण 'विकास भी विरासत भी' के मंत्र से साकार किया है

▸▸ अंबाजी–तारंगा–रेल परियोजना से आसान कनेक्टिविटी और स्थानीय आर्थिक विकास को गति मिलेगी

श्री पटेल ने कहा कि तीर्थ स्थलों के विकास को पर्यटन से जोड़ने के प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण का अनुसरण करते हुए अंबाजी में गब्बर स्थल पर देश का सबसे बड़ा लाइट एंड साउंड शो शुरू किया गया है तथा परिक्रमा पथ और सांस्कृतिक विलेज जैसे प्रकल्पों से यात्रियों को नई सुविधाएं मिल रही हैं ।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में अंबाजी–तारंगा रेल परियोजना से इस क्षेत्र की कनेक्टिविटी मजबूत होगी। इसके परिणामस्वरूप यात्रियों की सुविधा बढ़ेगी और स्थानीय आर्थिक विकास को गति मिलेगी।

उन्होंने जोड़ा कि गुजरात पवित्र तीर्थस्थल विकास बोर्ड द्वारा राज्य के विभिन्न तीर्थ स्थलों में अब तक करोड़ों के विकास कार्य पूर्ण किए गए हैं और आने वाले समय में और अधिक विकास कार्यों की योजना बनाई गई है।

इस अवसर पर मंत्री श्री प्रवीणभाई माळी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पवित्र तीर्थ स्थलों के पुनरुद्धार और विकास के लिए जो पहल की है, उसे मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल दृढ़ता से आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि आस्था, संस्कृति और शक्ति का जहां त्रिवेणी संगम होता है, ऐसे अंबाजी धाम के सर्वांगीण विकास के लिए राज्य सरकार संपूर्ण कटिबद्ध है। सरकार की यह योजना इतनी भव्य और दूरदर्शी है कि अंबाजी की इस नई विकास यात्रा को आने वाली पीढ़ियां युगों तक याद रखेंगी।

मंत्री श्री जयरामभाई गामित ने कहा कि अंबाजी शक्तिपीठ में हर वर्ष भाद्रपद पूर्णिमा के महा मेले के दौरान लाखों श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं। श्रद्धालुओं की इस अटूट आस्था को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा 1,632 करोड़ रुपए के मेगा कॉरिडोर प्रोजेक्ट के माध्यम से अंबाजी का कायापलट किया जाएगा। इन ऐतिहासिक विकास कार्यों से श्रद्धालुओं को अत्याधुनिक सुविधाएं प्राप्त होंगी और साथ ही स्थानीय स्तर पर नए रोजगार के व्यापक अवसर भी सृजित होंगे, जो बनासकांठा जिले के आर्थिक विकास को नई गति देंगे।

इस कार्यक्रम में पर्यटन सचिव श्री कुलदीप आर्या, गुजरात पवित्र तीर्थस्थल विकास बोर्ड के सदस्य सचिव श्री रमेश मेरजा, जिला कलेक्टर श्री मिहिर पटेल, जिला विकास अधिकारी श्री एम. जे. दवे, अंबाजी सरपंच सहित विभिन्न अधिकारी, पदाधिकारी और बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री प्रदीप कुमार ने गुजरात के पहले ग्रीन रेलवे स्टेशन – एकतानगर का किया दौरा

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री प्रदीप कुमार ने दिनांक 07 फरवरी 2026 को भारत के सबसे सुंदर और आधुनिक रेलवे स्टेशनों में से एक तथा गुजरात के पहले "ग्रीन रेलवे स्टेशन" एकता नगर का दौरा किया। श्री कुमार ने रेलवे स्टेशन परिसर का निरीक्षण कर स्वच्छता, आधुनिक सुविधाओं एवं ग्रीन टेक्नोलॉजी से जुड़ी विस्तृत जानकारी प्राप्त की। वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने इस अवसर पर महाप्रबंधक श्री कुमार को इस खंड पर चल रही परियोजनाओं और मंडल की उपलब्धियों से अवगत कराया।

उन्होंने बताया कि एकता नगर स्टेशन पर ट्रेन परिचालन क्षमता को विस्तार देते हुए एक अतिरिक्त लूप लाइन का निर्माण प्रस्तावित है। डभोई और एकतानगर रेल खंड में कैटल रन ओवर की घटना को रोकने के लिए मैटल क्रैश बैरियर लगाने का कार्य प्रगति पर है। इससे इस रेल खंड में ट्रेनों की पंक्चुअलिटी में सुधार होगा। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विज़न को साकार करते हुए अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत गोधरा स्टेशन का कायाकल्प हो गया है। जल्द ही माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा इसका उद्घाटन किया जायेगा। इसी प्रकार प्रतापनगर और डभोई स्टेशन का अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत विकास कार्य प्रगति पर है। यात्रियों की सुविधा के लिए प्रतापनगर और डभोई स्टेशन पर 12 मीटर फुट ओवर ब्रिज का निर्माण अंतिम चरण में है। इस रेल खंड के कुंदेला और तिलकवाड़ा स्टेशनों को B स्टेशन में परिवर्तित किया गया है, जिससे परिचालन क्षमता के सुधार के साथ साथ सैक्शन कैपिसिटी में वृद्धि संभव होगी।

एकतानगर स्टेशन पर निरीक्षण के बाद महाप्रबंधक श्री प्रदीप कुमार ने आज वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के साथ एकता नगर - प्रतापनगर खंड का विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण भी किया। निरीक्षण के दौरान, उन्होंने रेल पटरियों की सुरक्षा और परिचालन दक्षता की समीक्षा की।

महाप्रबंधक श्री प्रदीप कुमार ने अपने इस दौरे में वडोदरा मंडल के अधिकारियों से मंडल कार्यालय में संवाद भी किया और मंडल के अधिकारियों का मार्गदर्शन भी किया। उन्होंने वर्क साइट विशेषकर नॉन इंटरलॉकिंग कार्य में संरक्षा को विशेष प्राथमिकता देने के साथ साथ कैपेसिटी एनहांसमेंट, बिज़नेस डेवलपमेंट जैसे क्षेत्रों में मजबूती से काम करने पर जोर दिया। श्री कुमार ने मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के नेतृत्व और उनकी अधिकारिओं की उपलब्धियों और उनके पारस्पर सहयोग एवं टीम वर्क की सराहना भी की।

पश्चिम रेलवे द्वारा दस जोड़ी स्पेशल ट्रेनों के फेरे विस्तारित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को समायोजित करने के लिए विभिन्न गंतव्यों के बीच 10 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों के फेरे विस्तारित किए गए हैं। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इन ट्रेनों का विवरण इस प्रकार है:

1. ट्रेन संख्या 09207/09208 बांद्रा टर्मिनस – भावनगर साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09207 बांद्रा टर्मिनस – भावनगर साप्ताहिक स्पेशल को 27 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09208 भावनगर ▸▸ बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल को 26 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

2. ट्रेन संख्या 09415/09416 बांद्रा टर्मिनस – गांधीधाम साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09415 बांद्रा टर्मिनस – गांधीधाम साप्ताहिक स्पेशल को 26 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09416 गांधीधाम ▸▸ बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल को 26 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

3. ट्रेन संख्या 09055/09056 बांद्रा टर्मिनस – उधना स्पेशल
ट्रेन संख्या 09055 बांद्रा टर्मिनस – उधना स्पेशल को 31 मार्च, 2026 तक बढ़ा दिया गया है। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09056 उधना – बांद्रा टर्मिनस स्पेशल को 31 मार्च, 2026 तक बढ़ा दिया गया है।

4. ट्रेन संख्या 09037/09038 बांद्रा टर्मिनस – भुज द्वि-साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09037 बांद्रा टर्मिनस – भुज साप्ताहिक स्पेशल को 28 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09038 भुज – बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल को 29 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

5. ट्रेन संख्या 09009/09010 बांद्रा टर्मिनस – भुज साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09009 बांद्रा टर्मिनस – भुज साप्ताहिक स्पेशल को 29 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09010 भुज – बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल को 30 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

6. ट्रेन संख्या 09011/09012 बांद्रा टर्मिनस – भुज साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09011 बांद्रा टर्मिनस – भुज साप्ताहिक स्पेशल को 31 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09012 भुज – बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल को 25 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

7. ट्रेन संख्या 09017/09018 बांद्रा टर्मिनस – वेरावल साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09017 बांद्रा टर्मिनस – वेरावल साप्ताहिक स्पेशल को 29 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09018 वेरावल ▸▸ बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल को 30 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

8. ट्रेन संख्या 09035/09036 बांद्रा टर्मिनस – उधना द्वि-साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09035 बांद्रा टर्मिनस – उधना साप्ताहिक स्पेशल को 28 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09036 उधना – बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल को 27 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

9. ट्रेन संख्या 09561/09562 बांद्रा टर्मिनस – ओखा साप्ताहिक स्पेशल
ट्रेन संख्या 09561 बांद्रा टर्मिनस – ओखा साप्ताहिक स्पेशल को 25 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09562 ओखा – बांद्रा टर्मिनस साप्ताहिक स्पेशल को 31 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

10. ट्रेन संख्या 09215/09216 भावनगर – गांधीग्राम डेली सुपेशल (अनारक्षित)
ट्रेन संख्या 09215 गांधीग्राम – भावनगर डेली अनारक्षित स्पेशल को 31 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09216 भावनगर ▸▸ गांधीग्राम डेली अनारक्षित स्पेशल को 31 मार्च, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

उपर्युक्त सभी आरक्षित ट्रेनों के विस्तारित फेरों की बुकिंग 08 फरवरी, 2026 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव के समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

यमुना एक्सप्रेसवे पर दर्दनाक हादसा, लापरवाही ने ली छह जानें

आय फाइनेंस का आईपीओ बाजार में उतरने को तैयार, एंकर निवेशकों से 454.5 करोड़ की मजबूत शुरुआत

(जीएनएस)। नई दिल्ली। नॉन-बैंकिंग फाइनेंशियल कंपनी आय फाइनेंस लिमिटेड ने अपने प्रस्तावित आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) से पहले एंकर निवेशकों से 454.5 करोड़ रुपये जुटाकर बाजार में मजबूत एंट्री का संकेत दे दिया है। कंपनी ने शनिवार को स्टॉक एक्सचेंजों को दी गई जानकारी में बताया कि एंकर इन्वेस्टर्स को 129 रुपये प्रति शेयर के भाव पर इक्विटी शेयर अलॉट किए गए हैं। यह आईपीओ 9 फरवरी को आम निवेशकों के लिए खुलेगा और 11 फरवरी तक इसमें बोली लगाई जा सकेगी। बाजार जानकारों का मानना है कि एंकर निवेशकों की मजबूत भागीदारी से निवेशकों के बीच इस इश्यू को लेकर सकारात्मक माहौल बन सकता है।

कंपनी के मुताबिक एंकर निवेशकों को कुल 3,52,32,558 इक्विटी शेयर आवंटित किए गए हैं। इनमें से 76,74,560 इक्विटी शेयर दो घरेलू म्यूचुअल फंड्स की चार अलग-अलग स्कीमों को दिए गए हैं। एंकर निवेशकों की सूची में देश और विदेश के कई प्रतिष्ठित संस्थानों के नाम शामिल हैं, जिनमें न्यूयॉर्क स्टेट टीचर्स रिटायरमेंट सिस्टम, सोसाइटे जेनरल, एचडीएफसी लाइफ इंश्योरेंस कंपनी, बीएनपी पारिबा फाइनेंशियल मार्केट्स, बे पॉन्ड पार्टनर्स और इथान क्रीक मास्टर इन्वेस्टर्स (केमैन) जैसे बड़े वैश्विक निवेशक शामिल हैं। इन नामों की मौजूदगी से कंपनी के कारोबारी मॉडल और भविष्य की संभावनाओं पर संस्थागत निवेशकों के भरोसे को बल मिलता है।

आय फाइनेंस लिमिटेड ने अपने आईपीओ के लिए 122 रुपये से 129 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया है। कंपनी का लक्ष्य इस इश्यू के जरिए पूंजी जुटाकर अपने लोन पोर्टफोलियो को और मजबूत करना, डिजिटल क्षमताओं को बढ़ाना और देश के उन क्षेत्रों में अपनी पहुंच का विस्तार करना है, जहां औपचारिक बैंकिंग सेवाएं सीमित हैं। कंपनी मुख्य रूप से किफायती आवास वित्त, सूक्ष्म और लघु उद्यमों को ऋण तथा निम्न और मध्यम आय वर्ग के ग्राहकों को वित्तीय सेवाएं प्रदान करने पर केंद्रित है।

विशेषज्ञों का कहना है कि मौजूदा समय में एनबीएफसी सेक्टर निवेशकों की नजर में फिर से आकर्षण का केंद्र बन रहा है, खासकर उन कंपनियों के लिए जो संतुलित जोखिम प्रबंधन और स्थिर ग्रोथ मॉडल पर काम कर रही हैं। आय फाइनेंस लिमिटेड ने पिछले कुछ वर्षों में अपने एसेट क्वालिटी, कलेक्शन एफिशिएंसी और टेक्नोलॉजी आधारित लेंडिंग सिस्टम पर खासा जोर दिया है, जिसका असर इसके वित्तीय प्रदर्शन में भी देखने को मिला है। एंकर निवेशकों की भागीदारी को इसी भरोसे का संकेत माना जा रहा है।

आईपीओ के खुलने के साथ ही खुदरा निवेशकों, गैर-संस्थागत निवेशकों और योग्य संस्थागत खरीदारों की नजर इस इश्यू पर रहेगी। बाजार विश्लेषकों का मानना है कि यदि समग्र बाजार का रुझान सकारात्मक बना रहता है, तो इस आईपीओ को अच्छी प्रतिक्रिया मिल सकती है। निवेशकों को हालांकि कंपनी के बिजनेस मॉडल, जोखिम कारकों और वित्तीय स्थिति का अध्ययन कर ही निवेश निर्णय लेने की सलाह दी जा रही है।

गुजरात के गांधीधाम–आदिपुर रेलखंड का चौहरीकरण, गति और व्यापार को मिलेगा नया बल

क्षमता वृद्धि, सुगम परिचालन और क्षेत्रीय आर्थिक प्रगति की दिशा में अहम कदम

(जीएनएस)। 10 फरवरी को 120 किमी प्रति घंटे की गति से स्पीड ट्रायल, रेलवे ट्रैक से दूर रहने की अपील पश्चिम रेलवे अहमदाबाद मण्डल के गांधीधाम-आदिपुर (10.69 किमी) रेल सेक्शन के बीच चौहरीकरण (Quadrupling) परियोजना के अंतर्गत तीसरी और चौथी लाइन कार्य पूर्ण हो गया है। 9 व 10 फरवरी 2026 को रेल संरक्षा आयुक्त (CRS), पश्चिम सर्कल द्वारा संरक्षा निरीक्षण किया जायेगा तथा 10 फरवरी 2026 को 120 किमी प्रति घंटे की गति से स्पीड ट्रायल किया जाएगा। स्थानीय निवासियों से विशेष अनुरोध है कि वे रेलवे ट्रैक से दूर रहे और रेलवे लाइन पार न करें। अहमदाबाद मंडल अपने रेल नेटवर्क को अधिक सक्षम, सुरक्षित और भविष्य की जरूरतों के अनुसार विकसित करने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है। इसी क्रम में गुजरात के गांधीधाम–आदिपुर रेलखंड के बीच चौहरीकरण तथा आदिपुर स्टेशन पर 'वाई' कनेक्शन देने का महत्वपूर्ण कार्य किया गया है। यह परियोजना कच्छ क्षेत्र में बढ़ती रेल मांग को पूरा करने और बंदरगाह आधारित माल यातायात को सुचारु बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

परियोजना की मुख्य विशेषताएँ:

▸▸ ट्रैक लिंकिंग: 17 किलोमीटर

▸▸ छोटे ब्रिज : 8

▸▸ अर्थवर्क (मिट्टी कार्य): 2.60 लाख घन मीटर

▸▸ आदिपुर स्टेशन पर सिग्नल व टेलीकॉम (S&T) एवं ऑपरेटिंग कंट्रोल

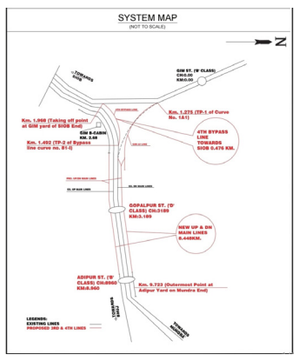

(OC) बिल्डिंग का निर्माण

▸▸ चौथी लाइन सहित समस्त सेक्शन का इलेक्ट्रिफिकेशन

▸▸ इस सेक्शन के बीच आने वाले एकमात्र गोपालपुर रेलवे स्टेशन का छायापुरी स्टेशन की तर्ज पर आधुनिक स्टेशन भवन का निर्माण।

▸▸ गांधीधाम बी केबिन में प्रमुख यार्ड रीमॉडलिंग कार्य किया गया है, जिसमें 16 नए प्वाइंट्स एवं क्रॉसिंग डाले गए हैं।

▸▸ आदिपुर स्टेशन पर भी प्रमुख यार्ड रीमॉडलिंग कार्य किया गया है, जिसमें 21 नए प्वाइंट्स एवं क्रॉसिंग डाले गए हैं, साथ ही 1 लूप लाइन भी शामिल है।

परियोजना का महत्व:

गांधीधाम–आदिपुर ब्रॉडगेज रेलखंड एक महत्वपूर्ण माल ढुलाई खंड है। इस मार्ग से कांडला व मुंद्रा बंदरगाह, भुज, वायोर और अन्य क्षेत्रों का आयात–निर्यात माल देश के विभिन्न हिस्सों तक पहुँचता है। वर्तमान में यह खंड अत्यधिक व्यस्त (ओवरसैचुरेटेड) है जिससे परिचालन पर दबाव बना रहता है। इन परिचालन बाधाओं को कम करने के लिए दो अतिरिक्त लाइनों की आवश्यकता थी।

भुज, वायोर और हाजीपीर क्षेत्रों से नमक और सामान्य माल भी इसी मार्ग से देश के विभिन्न हिस्सों में भेजा जाता है। मुंद्रा बंदरगाह की बढ़ती क्षमता को देखते हुए भविष्य में माल यातायात और बढ़ने की संभावना है। ऐसे में गांधीधाम–आदिपुर के बीच चौहरीकरण से भीड़ कम होगी और मालगाड़ियों का संचालन बेहतर होगा। यह परियोजना कच्छ क्षेत्र के विकास को भी गति देगी।

▸▸ यह सेक्शन अहमदाबाद मंडल में सबसे अधिक GMT (Gross Million Tonnes) लोडिंग वाला है। इस क्षेत्र से प्रति वर्ष 70 से अधिक जीएमटी लोडिंग होती हैं। चौहरीकरण (Quadrupling) से इस सेक्शन की लाइन क्षमता में वृद्धि होगी, जिससे ट्रेनों का परिचालन अधिक सुचारु, समयनिष्ठ और सुरक्षित बनेगा। लाइन क्षमता बढ़ने से यात्री ट्रेनों की समयपालनता सुधरेगी, पीक समय में भी संचालन आसान होगा और नई ट्रेनों या अतिरिक्त फेरों की संभावना बढ़ेगी। यात्रियों को अधिक भरोसेमंद और आरामदायक यात्रा मिलेगी।

▸▸ गांधीधाम–आदिपुर खंड पश्चिम रेलवे का एक रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण मार्ग है, जो बंदरगाहों, उद्योगों और राष्ट्रीय रेल नेटवर्क को जोड़ता है। इस मार्ग पर माल और यात्री दोनों ट्रेनों की संख्या बढ़ रही है। तीसरी और चौथी लाइन बनने से लाइन क्षमता बढ़ेगी और ट्रेनों का संचालन बिना रुकावट के हो सकेगा।

▸▸ नवनिर्मित गोपालपुर नये रेलवे स्टेशन से अहमदाबाद की ओर से आने वाली गाड़ियों को भुज जाने के लिए गांधीधाम में जाकर इंजन रिवर्सल करने की आवश्यकता नहीं होगी और जिससे यात्री गाड़ियां का 20 मिनट समय बचेगा।

▸▸ आदिपुर स्टेशन पर 'वाई' कनेक्शन से ट्रेनों को दिशा बदलने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इससे समय और ईंधन की बचत होगी, संचालन आसान होगा।

▸▸ इस परियोजना से कांडला और मुंद्रा जैसे बंदरगाहों से जुड़े कंटेनर, पेट्रोलियम, उर्वरक, खाद्यान्न और अन्य माल के परिवहन में तेजी आएगी। मालगाड़ियों का टर्नअराउंड समय कम होगा, वैगनों का बेहतर उपयोग होगा और लॉजिस्टिक लागत घटेगी, जिससे उद्योगों को लाभ मिलेगा और निर्यात–आयात को बढ़ावा मिलेगा।

▸▸ यह परियोजना कच्छ क्षेत्र के औद्योगिक विकास को मजबूती देगी, व्यापार, पर्यटन और रोजगार के अवसर बढ़ाएगी तथा निवेश के लिए अच्छा माहौल बनाएगी।

गांधीधाम–आदिपुर चौहरीकरण और 'वाई' कनेक्शन परियोजना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो रेल ढांचे को मजबूत करेगी और कच्छ क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास में योगदान देगी।

भूपेंद्र दादा ने बनासकांठा की बेटी से किया हुआ वचन निभाया

प्रधानमंत्री द्वारा दिया गया कार्य मंत्र 'जो कहना उसे करना' का मुख्यमंत्री ने साकार किया

▸▸ बेटी साम्या की एक भावना और मुख्यमंत्री का एक वचन : बनासकांठा में साकार हुआ सहज संवाद

▸▸ "दादा, आप आएंगे न?" - बेटी साम्या की भावना को मुख्यमंत्री ने दिया मान

▸▸ वीडियो संवाद में दिए गए वचन से स्कूल यात्रा तक : साम्या और मुख्यमंत्री का भावनात्मक सहज संवाद

▸▸ "पढ़-लिखकर कलेक्टर बनना" : मुख्यमंत्री का आशीर्वाद

▸▸ आज मेरा और मेरी स्कूल का सपना पूरा हुआ : साम्या प्रजापति

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल अक्सर अपनी वयोवृद्ध वात्सल्यता एवं मानवीय संवेदनशीलता का परिचय देते रहे हैं। ऐसा ही एक भावनात्मक प्रसंग बनासकांठा जिले के पीएम श्री उत्तमपुरा (डांगिया) अनुपम प्राथमिक विद्यालय में देखने को मिला।

ता. 28/04/2025 को आयोजित एक वीडियो संवाद के दौरान कक्षा-1 में पढ़ने वाली बेटी साम्या प्रजापति ने सहजता से मुख्यमंत्री से पूछा था, "दादा, आप हमारी स्कूल में कब आएंगे?"

इस मासूम प्रश्न पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने वयोवृद्ध स्नेहपूर्ण उत्तर देते हुए कहा था, "मैं जब भी वहां आऊंगा तब जरूर तुमसे मिलने आऊंगा।"

मुख्यमंत्री ने उस समय जो बात कही थी वह उनके मन में थी और इसी कारण उन्होंने बनासकांठा में होने वाले कार्यक्रम

में इस बेटी के गांव की स्कूल की भेंट अवश्य करने को कहा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का शनिवार को अंबाजी कॉरिडोर के शिलान्यास अवसर पर बनासकांठा के दौरे का कार्यक्रम था। मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम में जाने से पहले उत्तमपुरा-डांगिया गांव की स्कूल की यात्रा का आयोजन किया।

मुख्यमंत्री ने पहले दिए गए वचन को पूरा करने के लिए बेटी साम्या की भावना का सम्मान करते हुए पीएम श्री उत्तमपुरा (डांगिया) अनुपम प्राथमिक विद्यालय की व्यक्तिगत रूप से भेंट की। मुख्यमंत्री ने स्कूल के विद्यार्थियों के साथ आत्मीय और सहज संवाद किया तथा उनके अभ्यास, स्कूल परिसर और शिक्षा व्यवस्था की जानकारी प्राप्त की।

इस अवसर पर बेटी साम्या ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि, "मैंने दादा से कहा था कि आप हमसे मिलने आएंगे न दादा ने बात याद रखी और आज मेरा और मेरी स्कूल का सपना पूरा कर दिया।"

साम्या ने मुख्यमंत्री के सामने श्लोक पाठ किए। उसका प्रतिसाद देते हुए मुख्यमंत्री ने बेटी को आशीर्वाद देते हुए कहा, "तुम पढ़-लिखकर बड़ी होकर कलेक्टर बनना और फिर मुझसे मिलने आना।"

बेटी साम्या ने भी दृढ़ विश्वास के साथ दादा को वचन दिया कि, "मैं बड़ी होकर आपसे जरूर मिलने आऊंगी।"

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की इस सहजता और मानवीय संवेदनशीलता से स्कूल परिवार तथा राज्यभर के एसएमसी सदस्यों में भी विशेष आनंद की भावना छा गई।

इस भावनात्मक अवसर पर वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री प्रवीणभाई माळी, स्कूल के शिक्षक, विद्यार्थी तथा स्थानीय अग्रणी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अंबाजी में मां अंबा के दर्शन कर राज्य की शांति, समृद्धि तथा कल्याण के लिए प्रार्थना की

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शनिवार को अंबाजी में जगत जननी मां अंबा के पावन दर्शन कर मां के चरणों में शीश झुकाए।

मुख्यमंत्री ने राज्य की शांति, समृद्धि और कल्याण के लिए प्रार्थना की। मुख्यमंत्री अंबाजी कॉरिडोर के प्रथम चरण के कामों के शिलान्यास के लिए अंबाजी की यात्रा पर थे, उस दौरान उन्होंने अंबाजी मंदिर में विधि-विधानपूर्वक पूजा अर्चना की।